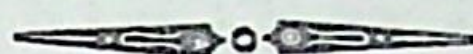
कबीर उपदेश



॥ श्रीः ॥

कबीरउपदेश ।



बेगमसरायनिवासी ठाकुरदासजीने श्रीमहन्त दीनादास साहेबकी आज्ञानुसार "ज्ञान-प्रकाश" व "सुखनिधान" ग्रन्थों-मेंसे उत्तम २ वाणियोंका संग्रह करके बनाया ।



मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : अगस्त २०१९, संवत् २०७६

मूल्य : ७० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate,
Pune -411 013.

प्रस्तावना.

सब संत महात्माओं व सज्जन पुरुषोंको विदित हो कि, इससे बहुत पहले "ज्ञानप्रकाश" व "सुखनिधान" नामक दो पुस्तकें बनी थीं उनमें बहुत स्थानोंमें अशुद्ध मिथ्या बचन लिखे हुए थे कि जिसके पढनेसे अनेक भ्रम व संशय उत्पन्न होतेथे सो अब सबसंतोंका सेवक ठाकुरदास-साकिन बेगमसरायने उन दोनों पुस्तकोंमेंसे सही २ बानी बचन छांटकर और खूब शोधकर यह ग्रंथ "कबीरउपदेश" नामसे हमारी आज्ञानुसार बनाया है कि, जिसके पढनेसे ज्ञानकी उत्पत्ति होवेगी. इस वास्ते सब महापुरुषोंसे निवेदन है कि इस ग्रंथको दया करके पढैं जिससे स्वयं लाभ उठावें और मेरा परिश्रम सफल हो.

यह पुस्तक सर्वाधिकारसहित सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास अध्यक्ष "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्, प्रेस-बम्बईको समर्पण करताहूँ और कोई महाशय इसके छापने आदिका विचार न करैं, नहीं तो लाभके बदले हानि उठावेंगे.

सज्जन पुरुषोंका कृपाकांक्षी-

ता० १८ मार्च सन् १९०६ ई० } श्रीमहन्त दीनादास साहेब कबीरपन्थी, स्थान निहालपूर इलाहाबाद.

॥ श्रीः ॥

कबीरउपदेशकी–विषयानुक्रमणिका।



इत्यनुक्रमणिका समाप्ता।



सत्तनामसत्तकबीर ।

अथ ठाकुरदासविरचित–

कबीरउपदेश ।



साखी ।

प्रथमहि करता आप थे, बीज पिछे तेहिं माँहिं ।
ताहि लखै कोइ संतजन, सब संशय मिटजाँहिं ॥

छन्द ।

सतनाम सतगुरु ध्यान सतपद पुरुषहंसको सो कहो ।
सतलोकसो निःलोक पहुँचै अभयपद दर्शन लहो ॥
जिव लहै सुमिरन मारबीरा अंक अविचल जो गहै ।
सतनाम सुमिरत काल डरपै मोक्षके न्यारा रहै ॥

सोरठा ।

समझहु रंक नरेश, कहो सँदेशा पुरुषको ।
जो गहु मम उपदेश, कहैं कबीर सो अमर होय ॥
चीनहु किरतम आदि, सन्त असन्त विचारहू ।
छाँडदेहु बकवाद, खोजहु अविचल कंथको ॥

रमैनी ।

सतगुरु सत्तशब्द सतनामा । सत्तपुरुष संतन सुख धामा॥
सतसुकृतसतलोकनिवासी।दुखनाशकअविचलसुखरासी ॥
अमीअनामसोसंत कहावै।अकह अलख सो आप रहावै॥
अविगतअकहिअमानसरूपा।अगहअडोलअबोलअनूपा ॥
अमर अंजावन निःसोस्वादी। निःकामी निरमोह अनादी॥
आपहिनित्यऔरनहिंकोई । जमदारुन भंजन बहुसोई ॥
निःक्रोधी निरलोभ निःशंका । गुणातीत निर्बैर निरंका ॥
नहिं तिन पांचतत्त्व तन धारा। रहै अमान गर्भसों न्यारा॥
प्रथमकर्ता मुख अमृतबानी।जाकी रची सकल रजधानी ॥
मैंताको निशिदिन गुणगाऊँ।गुप्त प्रगट तेहिपलपल धाऊँ॥

साखी ।

जाही खोजत जुगगये, घटहीमें सो नूर ।
घाले गर्भगुमानमें, तेहिते परिगा दूर ॥

रमनी ।

आप अखंडित उग्र शरीरा। सोहं सोहं सत्तकबीरा ॥
पांचतत्त्व गुण तीनों जापै । पूरण ब्रह्म बोलता आपै ॥
आपै तत्त्व आप गुणधारी । आप परमगुरु इच्छाकारी॥
आपहि आप लखै ना कोई। ता संशयसब गये बिगोई ॥
हम आपनपौ जुगजुग जाना।सबसे कहत रहे यह ज्ञाना॥
साँचा शब्द संत सबकीन्हा।सारशब्द कोइ बिरले चीन्हा॥

सत्तपुरुष सतगुरु सो आहीं । गुरुगमसतगुरुनामसमाहीं ॥
सतगुरुध्यान जाहिपै होई । सो हंसानहिं जाँय बिगोई ॥
उनके ढिगसोहमचलिआये । जीवउबारन मोहिं पठाये ॥
सतगुरुशब्द गहै जो हंसा । मेटों जन्म मरणका संसा ॥

साखी ।

जो कोइ मानै सत्तकर, चीन्हैं बचन हमार ।
ताको बाल न बांकही, कहैं कबीर विचार ॥

रमैनी ।

यह घट रतन जतनकी खानी । घटमें आप २ घट ठानी ॥
घटका खोज न काहू पाया । घटमें धर्म घटहिमें दाया ॥
घटमें वेद घटहिमें बानी । सरबमूल घटहीमें आनी ॥
घटमें चोर साहु घटमाहीं । पाप पुण्य घटमाहिंरहाहीं ॥
घटमें निकट घटहिमें दूरी । घटमें रहै सजीवन मूरी ॥
आदिग्रंथ घटहीमें कीन्हां।शून्य शिखर घटहीमेंचीन्हां ॥
घटमें तीर्थ व्रत ठहरावा । मूरतिपूजा घटमें रहावा ॥
घटमें है वसुदेव कन्हैया । रामलछन औ चारो भैया ॥
घटमें मार जुद्ध घट माहीं । घटमें रावण लंका आहीं ॥
घटमें ज्ञान ध्यान सब पावा । घटमें जोतसरूप जगावा॥

साखी ।

अजबख्याल घटका रचा, जानै चतुरसुजान ।
कहैं कबीर सो सन्त है, जेहि घट है पहिंचान ॥

सतगुरुवचन ।

रमैनी ।

कहैं कबीर हम कायासोधी। जेहिजस देखी तेहि तसबोधी॥
अपने घटमें कीन्ह विचारा। देखा धर्मदासका द्वारा ॥
धर्मदास बाँधवके बानी। प्रेमभक्त भक्ती पर जानी॥
दाया धर्म बहुत उर धरही। शालिगरामकी सेवा करही॥
साधुसंतके चरण पखारै। करि बिनती अस्तुति अनुसारै॥
संध्या आरति कर मनलाई। चित आशा बैकुण्ठ लगाई॥
मनसा वाचा भजे गोपाला। तिलकदेहिंतुलसीकी माला॥
द्वारिका जगन्नाथ हो आये। गया बनारस गङ्ग नहाये ॥
भगवद्गीता बहु उर आई। प्रेम भक्तिरस पिये अघाई ॥
बोलै बचन महारस बानी। बृथाकथा कबहूँ ना जानी ॥

साखी ।

रामकृष्णको सेवही, तीर्थ व्रतादिक मेटि ।
मथुरा परगट जब गये, भई कबीरसे भेंटि ॥

रमैनी ।

उदित बचन दाया सुख चैना। हँस मुसक्याइकहैंबहुबैना॥
धर्मदास तुमहौ बड़ज्ञानी। महाभक्त सीतल मुखबानी॥
तुमसम भक्त न देखा आना। घर तुम्हार कौने अस्थाना॥
कौन देशसे तुम चलिआये। जैहो कहाँ काह मन लाये ॥
काको भजन करो मनलाई। सो करताहै कौने ठाँई ॥
पूँछतमनमें दुखजिन आनो। करता आदिपुरुष पहिंचानो॥

जब लग करता चीन्ह न पावै । तबलग प्रेमभक्ति बहिजावै ॥
काह भये तीरथव्रत कीये । काह तिलक मालाके लीये ॥
काह भये सिल पूजा पाठी । अंतसमय खप जावै माटी ॥
काह भये सुन भगवतगीता । चिंता मिटी न मनको जीता ॥

साखी ।

जो करता ते ऊपजै, बसै सो कौने देश ।
ताको चीन्हों साहुजी, छाँड़ भरमका भेश ॥

धर्मदासवचन ।

रमैनी ।

सुनधर्मदासअचंभोभयेऊ । ऐसाबचनमोहिं कस कहेऊ ॥
अहोसाधु तुम कोधों अहऊ।अनकटबचन बहुतबिधकहहू॥
ताते हम नहिं बोल बढ़ावा । जाते हरिसेवा चितलावा ॥
सुनो साधु तुम यह दृढ़ ज्ञाना। बाँधोगढ़ मोरा अस्थाना ॥
बरन कसौंधी जातकी बानी । भजों राम दशरथकाप्रानी ॥
पारब्रह्म सेवों चितलाई । सीताराम सदा सुखदाई ॥
सेवा सालिग्रामकी पाऊँ । रामनाम निश्चय लवलाऊँ ॥
तीरथ बरत करौं दिनराती। दानपुण्य कीन्हों बहु भाँती ॥
सब भक्तनसे रहूँ अधीना। गुरुसेवा जिन दीक्षा दीना ॥
वृथा बचन कबहूँ ना कहेऊ।प्रेमभक्तिमें निशिदिन रहेऊँ ॥

साखी ।

हमरे शंका कछु नहीं, हम सेवैं रघुनाथ ।
ध्रुव प्रह्लाद उबारिया,सो हरि हमरे साथ ॥

सतगुरुवचन ।

रमैनीं ।

यह जग देख्यों अनकटरीती । तजैं साँच झूठेसों प्रीती ॥
जो धोखा तेहिं साँचा मानै।सत्यसार सो नहिं पहिचानै॥
आदिब्रह्म सो खोजै नाहीं । किरतम काल जो सेवै ताहीं॥
निज स्वामीको सेज न गहिये।जारचोर घरसंकटसहिये ॥
जो रक्षक तेहि गहै न कोई । जो घातिकतेहि ध्यावै सोई॥
पूजैं पाषाण तीरथ न्हावैं । पाप पुण्य बस आवैं जावैं ॥
दयाहीन नर पढ़ैं पुराना । पढि गुन अरथावैं बहुज्ञाना ॥
आथर अगुवा तेहिपुर माहीं ।तेहि पाछे बहुअंधरा जाहीं॥
अगुवा सहित कूप पर जाई । कहा कहूँ को बूझै भाई ॥
बुध मलीन अगुवा मति हीना । पढैं पुरानभेद ना चीन्हा॥

साखी ।

कालहि जीव सताय, भक्ति करी सनकादि मुनि ॥
शिवब्रह्मा विष्णुआदि, निशिदिन गावैं कालगुन ॥

धर्मदासवचन ।

रमैनी ।

तुम खण्डयो हरि अहैन कोई। अरे साधु बड़अचरज होई॥
विष्णुसदृश को देवि न देवा।तेहिको कहो कालकी सेवा॥
विष्णुतें अधिकऔर कोइ नाहीं।जमरा तिनके चेरा आहीं॥
शेष जालपर लछमनबाला। जिनके शिरमोतिनकीमाला॥

भगवद्गीता पुस्तक नाना । निशिदिन सुनै जपै भगवाना ॥
विप्रभेष षट्दर्शन हीको । महिमा कह्यो बिष्णुदेवन को ॥
सबै विष्णुकी भक्ति दृढावैं । तिरदेवा सबसृष्टि बतावैं ॥
शिव ब्रह्मा औ गुरूगणेशा । जाके सुमिरे मिटै कलेशा ॥
इन सब बिष्णुकी महिमा गाई।वेद पुराण सबै गोहराई ॥
रामनाम निज मोर अधारा । ताको मेटकिया अँधियारा ॥

साखी ।

खण्डनमण्डन क्यों करो,बोलो बचन सम्हार ।
यह रक्षक हैं जीवके, काल सँहारनहार ॥

सतगुरुवचन ।

रमैनी ।

अरे साहु मन धीरज करहू।तो हम कही सो गहि चितधरहू॥
बचन सुनत कसहुलकेहुसाहू।अपने हृदय न गमकर आहू॥
बिष्णुकथा तोहिंकहिसमझाऊँ। अगमगम्यकीबातसुनाऊँ॥
तुम भाषेयहवचन सँजोई।बिष्णुते अधिक और नहिंकोई॥
आपै धनी बिष्णु जो रहते।किमयोनि जठरा दुख सहते ॥
जो तुम होते बिष्णुके दासू।तो नहिं काल बिष्णुको ग्रासू॥
सेवक हाथ न स्वामी घालै।जो बिगरी हो ताहि सँभालै ॥
ब्रह्माबिष्णुरुद्रसनकादिक । मुनिवरनारदऔसिधसाधक॥
देवदिवसबहु चोकरी जाई। रुद्रहु कोपुनि जम धरिखाई॥
सबको जम धरि करै अहारा । लूटै सबै काल बरि आरा॥

साखी ।

परखौ बचन हमार,कालजाल बरिआर है ।
कहैं कबीर पुकारि,सब धोखेकी मार है ॥

रमैनी ।

अहो साहुके पूत सयाना । एते दिन तुम सुनेउ पुराना ॥
हम नहिं खण्डैं खण्डैं बेदा । पढै पुरान न समझै भेदा ॥
वेद शास्त्रसब करै पुकारा । स प्रलय एक पुरुष न्यारा ॥
करता पाथर कबहुँ न होई।यह संशय सब उन्हें बिगोई ॥
ब्रह्मा गये असंख बिलाई। कोटिन विष्णुकालधरि खाई॥
तीन लोकजेता कोइ आही । काल निरञ्जन सबकोडाही॥
अरे साहुतुम चतुर सुजाना।हिरदेकसन न विचारो ज्ञाना॥
निरखोशब्दगहो निजबानी। कर निर्वारि छोंड़मनमानी ॥
यहत्रिगुणका जाल पसारा।त्रिविध कालकला बिस्तारा॥
सो घर अब तुमखोजहु भाई।जापदपर सतजम नहिं पाई॥

साखी ।

ऐसो काल स्वभाव, दयाहीन प्रचण्ड है ॥
बचै न कोइ जग आय,यहशरीरका दण्ड है ॥

धर्मदासबचन।

रमैनी ।

साहेब अपना नामसुनावो।कहांसे आये कहांको जावो ॥
को तुम हौ सो कहोसुजाना।कहां तुम्हारो निज अस्थाना॥
जब तुमएकाएकीरहिया।कौन बस्तु तुम भोजन करिया ॥

जबतुम रहे अकेल गोसांई। नारि पुत्र नाहीं जन्माई॥
कैसे खेत बीज विस्तारा। कैसे अपना रूप सँवारा॥
कौने कथी वेदकी बानी। कौने जोत पुरुष पहिचानी॥
तुरुक किताब कहांसे आवा। को बिहिस्त वैकुंठ बनावा॥
निर्गुण निरअञ्जन ॐकारा। यह बिध वचनकौन उच्चारा॥
कौन नाम है सिरजनहारा। कौन नाम है प्राण अधारा॥
एकैतें दूसर किन कीन्हा। इन सब कैसे तुमही चीन्हा॥

साखी।

तुम बड ज्ञानी पुरुष हो, बचन कहों समुझाय॥
त्रयदेवा प्रलय गये, तुम कहां रहे समाय॥

सतगुरुवचन।

रमैनी।

अरे साहु हम तहां रहाई। जम प्रवेश तहां सपनेहु नाहीं॥
जाके डर कांपै जमराई। अहो साहु हम तिन गुणगाई॥
तीनलोक जब परलय होई। चौथलोक सुख सदा समोई॥
पिरथी आदि मोर अस्थाना। जबअकेल हमरहेनिदाना॥
अमृतरूपी हमरी देहा। भोजनका मोहिं कौनसनेहा॥
सब जुग हंसा रहे अकेला। इच्छा भई आपसे मेला॥
मायारूप नारि होय आई। स्वाती बीज वीर्ज जिमिपाई॥
नाद बिंदु एक संग समाना। तीन देवता उपजे आना॥
सब मिल आपन रचनाठानी। वेद किताबसबकीनबखानी॥
हिन्दु तुरुक भये संचारा। रचे पुरान कोरान असारा॥

साखी ।

एकै ते दूसर भया, निरंकारको थाप ॥
सुन्न सनेही सब भया, यही बोलता आप ॥

रमैनी ।

धर्मदास म कहूँ बिबेका । समझो नामआदि है एका ॥
यासे भिन्न और है माया । जासे सृष्टि सकल उपजाया॥
सतसरूप सतलोक निवासी।सकलहंसके पिंड अविनाशी ॥
सत्तपुरुष एक रोम अँजोरा।तुलै न रविशशि लच्छकरोरा॥
पुरुष सोभा का बरनों भाई । बरनत मोसों बरनि न जाई॥
तिन साहबका हम कँडिहारा।जीवकाजको हम पग धारा॥
जीवनको ठग काल सतावै । बारम्बार कष्ट भुगतावै ॥
सत्तपुरुष तब मोहिं पठाये । जीव उबारन हम जग आये॥
जो जिव नाहीं चेतै भाई । बिरथा कालके मुखमें जाई ॥
अस कहि गुप्त भये प्रभुराई।धर्मदास महि परि मुरझाई ॥

साखी ।

चहुँदिशि चितवहिं चकितहोय,सुर्त गई कुम्हलाय ॥
ना जानी वह कौन हैं, कहँवहँ गये बिलाय ॥

धर्मदासबचन ।

रमैनी ।

धरमदास साहेब मन लाई।बाढी प्रीति अधिक चितपाई॥
विकल भये तनफिरैं उदासा।हमें छाँड़ कित कीनो बासा॥

जो मैं जानत होत बिछोही।पलक न लावत निरखततोही ॥
पलक देत कछु बिलम्ब नआई।कौन देशकहँ वाँको जाई ॥
मोहिकहा प्रभु दर्शन दीन्हा । गुप्तभये काहे पुनि छीना ॥
क्षोभ अधिक साहेब मन बाढे । जाय निकट यमुनाकेठाढे॥
विकलभये बिरहातन गाता । गिरे नयन जलकहे न बाता॥
पिया वियोगी त्रिया उदासी । कबहूँ घर कबहूँ बनवासी॥
भोजन भजन न भावै एका । सोच करै मनमाहिं विवेका॥
दिवस पांच पुनि ऐसेबीता।निपट विकलबाढी अतिप्रीता॥

साखी ।

रैन गँवाई तलफके, दिवस गँवाई रोय ।
का बडभाग सराहिये, साहेब मिलना होय ॥

रमैनी ।

छठये दिन अस्नाने गयऊ।कर अस्नान चेतवन कियऊ ॥
पुष्पवाटिका रहे सोहावन । बहुशोभा सुंदर अतिपावन ॥
आनेहु तोर पुष्प अरुपाती।चौक बिस्तार कीन बहुभाँती॥
तहाँ बैठि पूजा अनुसारा । प्रतिमा देव कीन बिस्तारा ॥
खोल पिटारीमुरति निकासा।ठाँव ठाँव धरि प्रगट प्रकासा
भेष छिपाय तहाँपुनि आये।चौकाके ढिग आसन लाये॥
मन अनुराग ज्ञान चित लावैं । जपै मंत्र औरफूल चढावैं॥
चंदन अरु अच्छत लैकरही। समिताहोयप्रतिमापरधरही॥
चँवर डोलावैं घण्ट बजावैं । अस्तुति देवपढैं चितलावैं ॥
कर पूजा प्रतिमासिरनावा । टारि पिटारी मूरति छिपावा॥

साखी ।

धर्मदास करि बीनती, हाथ जोरि सिरनाय ।
तुमहीं दीनदयाल हौं, जो माँगें सो पाय ॥

सतगुरुवचन ।

रमैनी ।

अरे साहु तुम यह काकरहू । पौवा सेर छटंकी धरहू ॥
धर्मदासहै नाम तुम्हारा । काहे न चीन्हों वचन हमारा ॥
आन दृष्टि करि चीन्हौ बानी।पीतरपाथर पाखण्ड पानी॥
सालिगराम हैं बोलनहारा । देह सरूप तिन साज हमारा॥
रामरामको सबै पुकारै । काल बलीन सभैको मारै ॥
सुनो साहु तुम बचन हमारा।तुम जिन होउ कालको चारा
जाको कहत नंदके लाला । सो तो फँसे कालके जाला ॥
करता राम भया मतिहीना । कपटमृगा काहे ना चीन्हा॥
काहे नहिं करो सुरति घटमाहीं । बिन चीन्हें बूडे भवमाहीं॥
नेति नेति कर बेद बखानी । तबहूं काहु मरम न जानी ॥

साखी ।

सुनो साहु मति धीर, परखि ज्ञान हिरदे धरो ।
काल अपर बल बीर, बिन विवेक कस पचि मरो ॥

धर्मदासवचन ।

रमैनी ।

कहो साधु तुमअचरजबाता।कहतनआवै कुछ विख्याता ॥
बुद्ध तुम्हार जान नहिं जाई।कस अज्ञानसम बोलो भाई॥

केहि कारन तुम प्रगट बैठावा। टारपिटारी मुरतिछिपावा॥
हम ठाकुरकी सेवा कीन्हा। हमकागुरू सिखावन दीन्हा॥
ताका सेर छटंकी कहेऊ। अस नहिं कहो चेत चित धरेऊ॥
जगन्नाथ परसे चितलाई। रामनाथ देखन को धाई॥
बद्रीनाथ केदारे गयऊ। बिन्द्राबन मथुरामें रहेऊ॥
परसे साम्हर औ हरिद्वारा। नीमखारमिश्री पगधारा॥
बारा बरस तीरथ हम कीन्हा।जाय द्वारिका छापा लीन्हा॥
इतने तीर्थ छेत्र होय आवा। साधु संतका एहि मत पावा॥

साखी।

माघ मास तिरबेनी गयों, औ काशी अस्थान॥
गया गजाधर परसऊ, गङ्गसागर अस्नान॥

सतगुरुवचन।

रमैनी।

अरे साहु हम नीक सिखावा।हमरे चित एक संशय आवा॥
एकदिवस हम सुनेउ पुराना।विप्रन कहाज्ञान सहिदाना॥
वेद वाक्यतिन हमें सुनावा। प्रभुकी लीला सुनिमन भावा॥
कहैं आदि प्रभु अगम अपारा।अकह कहेनहिं रहै अकारा॥
तुम कर गहि ठाकुर कहँ धरहू।गुप्त प्रगट दोऊ विध करहू॥
एकै पुरुष जगतके ईशा। अमित माहि बहुलोचन सीसा॥
इन साहेबके हाथ न पावाँ।सीस नयन मुखश्रवण न नावाँ॥
सुनेहु शीस प्रभु आय अकासा।पगपतालजासों करबासा॥

सो कस प्रतिमा पिटारिसमांही। अहौसाहुयह अचरजआही
गुरुगम एक सुना हम भाई। अहै संग प्रभु लखै न पाई ॥

साखी ।

जलमें थलमें अग्निमें, और पवन आकाश ।
जी जन्तु मानुष पशु, सब घट कीन्ह प्रकाश ॥

रमैनी ।

अहो साहु मैं बूझहुँ तोहीं। बचन एक सो तुम कहु मोहीं॥
यह घटमेंको बोलत आही। अरे साहु तुम चीन्हो ताही॥
जब लगि ताहिन चीन्हो भाई। पाहन पूजत जन्म सिराई॥
कोटि कोटि जो तिरथ नहाहू। सत्तनामबिन मुक्ति नसाहू॥
तुमको अहो कौन घट माहीं। ताहि साहु तुम चीन्हतनाहीं॥
सर्ब माँहि औ सबसे न्यारा। को खेलै यह खेल अपारा॥
जो यह घरमें बोलै भाई। ताहि नामको खोजो जाई ॥
किन यह सुंदर साज बनावा। नाना रंग रूप उपजावा ॥
ताहि न भजो साहुके धूता। कस पूजो पाहन भ्रम भूता ॥
कहैं कबीर कहों मैं सोई। पाथर पूजे पाथर होई ॥

साखी ।

पाथरकी नौका बनी, लोह सिक्ख है भार ।
थोडे जलमें बूडिगे, कौन जाय मँझधार ॥

रमैनी ।

धर्मदास यहि गहि चितधारो। प्रीति साधु सेवा अनुसारो॥
पीतर पाथर पूजैं अंधा। जे गुरुज्ञानहीन मतिमंधा ॥

प्रभुको शिला रूपकरि देखै । ताकर जीवनजन्मअलेखै ॥
शिला माहिं जोसुरति समावै । तनधरशिला जन्मसोपावै ॥
जहँ आशा तहँ बासा होई । ताका मेटि सकै नहिं कोई ॥
चातकविषमज्ञानबिनपानी । जितकितभटकैनापहिचानी ॥
जिम कन्यारहिपिताकेपासा । कौतुककरिपूजमनआसा ॥
धोखा कर कन्याकोब्याहू । तबसबतजो मिला जबब्याहू ॥
बिना खसमसे आसबुझाई । अस प्रतिमाको सेवहु भाई ॥
जबलगिघोखब्रह्मरहिछाई । तबलगि ज्ञानहृदयनहिंआई ॥

साखी ।

चेतन प्रतिमा पूजिये, कटै जुगन जुग पाप ।
जडपाहन पूजत फिरै, बूडिमुवा गइ गाप ॥

धर्मदासबचन ।

रमैनी ।

धर्मदाससुनिचकृतभयऊ । पूजा करत बिसरि सब गयऊ ॥
हे साहेब मैं बलि बलिजाऊँ । बिछुडे संत सँदेश बताऊँ ॥
हे साहेब जस तुम उपदेशा । संत एकमोहिं कहा सँदेशा ॥
अगम अगाधशब्दउनभाषा । किरतमकालएकनहिंराखा ॥
तीरथ ब्रत सर्गुनकी सेवा । पापपुण्य बहु कर्म करेवा ॥
पूजा पाठ एक नहिंमाना । संतभक्ति बिन और न जाना ॥
गुप्त भये पुनि हमको त्यागी । उनही दरसके हम वैरागी ॥
नाम तुम्हार कौन है भाई । सो भाषो मोसे प्रभुराई ॥

कौन देश है तुमरा थाना। कौन देशको कीन पयाना ॥
केहि साहेबका सुमिरन करहू। कहो बिलोइ गोइ जिनधरहू॥

साखी।

काल बधिक मानै नहीं, जीव सकल धरि खाय।
वाको अमल बताइये, बाँचै कौन उपाय ॥

सतगुरुवचन।

रमैनी।

धर्मदास तुम चतुर सुजाना। तुमरो देख नीक हम ज्ञाना॥
जिनभाषातोहिअगमकाज्ञाना। तिनसाहेबकेहमसहिदाना॥
सो वह हैं सतलोककेबासी। यह जग आवे रहै उदासी ॥
जन्म मरण नहिं बहुर समाहीं। इच्छारूपीदेह उन आहीं॥
सदा रहै निःइच्छा सोई। गुप्त कला जग लखै न कोई ॥
वहप्रभु हैं अबगतिअबिनाशी।दासकहाय प्रगटभयकाशी॥
नाम कबीर जोलाह कहाये। चरचा रामानँदसों लाये ॥
पिंड प्राण जस मोर सरूपा। ऐसे उन साहेबका रूपा ॥
सत्तनाम भक्ती गोहरावा। दया क्षमा निश्चल कर गावा॥
भाख्यो निर्गुन ज्ञान निनारा। वेद किताब न पावै पारा ॥

साखी।

काशीकंथ कबीर हैं, सकल पिण्डमें प्रान ॥
आदि अन्त औ मध्यमें, यह तज और न आन ॥

रमैनी ।

धर्मदास साधू मम नामा । संतनमें निशिदिन विश्रामा ॥
सत्तभक्तिमोहिनिसदिनभावै । संतनमिलिसतगुरुगुनगावै॥
जो जिवकरै साधुसेवकाई।सो मोहिअतिप्रिय लागैभाई ॥
अरे साहु जो कारजचहऊ।मोर सिखापन दृढकर गहऊ॥
सत्तपुरुषसे प्रेम बढ़ावो । शब्द चीन्हके कर्म कमावो ॥
खुलै दृष्टि जब साहेब पावै।भाव भक्ति जब दास कहावै॥
जीवदया पर आतम पूजा । सद्गुरु भक्तिआश नहिं दूजा॥
सत्त सदासुख बोलै बानी । झूठी प्रेम कबहुँ नहिं मानी ॥
हिन्दू तुरक दोऊ उपदेशा । मेटैं जीवन काल कलेशा॥
होगुरुमुखकी निगुरा भाई।ताहिबचन मोहि कहो बुझाई॥

साखी ।

निश्चय करके जानिओ, वह स्वामी हम दास ।
जीव उबारन कारने, पठवा तोही पास ॥

धर्मदासवचन ।

रमैनी ।

हे साहब गुरु तो हम कीना।तिनतो मोहिं सिखावन दीना॥
रूपदास बटलेश्वर सोई । तिनके सुनो शिष्य हम होई॥
तिनमोहि भेद यहीसमुझावा । पूजा सालिगरामकीलावा॥
गया गोमतीकाशी प्रागा । बहुकर पुण्य भजे अनुरागा॥
लक्ष्मीनरायणमूरतिदीना।विष्णुपंजरसुमिरनचित कीना॥

बालमुकुन्द गोबिन्द मुरारी । गोपी बल्लभ कुंजबिहारी ॥
जगन्नाथ बलभद्र सुभद्रा । पंचदेव औ देव गजेंद्रा ॥
यहि कहिके परमोद दृढ़ाई । मूरतिपूजि होहु मुक्ताई ॥
गुरुके बचन सीस पर राखा।बहुत दिना पूजा अभिलाखा॥
तुम दोउ भेषमिले प्रभुजबते।प्रियबानी मोहिं लागीतबते॥

साखी ।

मन चकृत तन हरषभे, सुनिके नीत अनीत ।
प्रिय लागो ब्रह्मज्ञान अति, उपजत हियमें प्रीत ॥

रमैनी ।

धनसाहेब तुमरी बलीहारी। मस्तक राखौं चरन तुम्हारी ॥
बचनतुम्हारोप्रियमोहि लागा।आगअधीनसाहेबरसपागा॥
तुम्हरे दरश भाग मम स्वामी ।सरने राखो अंतरयामी॥
मन मलीन मल दूर बहावो ।सार बस्तुका भेद बतावो ॥
कौननामकोनिज परगासा।केहिपरराखौंनिजकर आसा ॥
सो साहेब सब देहु बताई । शरन छोड़ि कतहूँ ना जाई॥
मोरे तो तुम सतगुरु आहू।सारशब्दजिन मोहिं छिपाहू ॥
उनहूँकी नहिं निन्दा करिहों । सतबिश्वासतुम्हारोधरिहों॥
वे गुरु सरगुन त्रिगुणपसारा।तुम सतगुरुजिव तारनहारा॥
हमका निज सेवक करजानो।सत्तकहों निश्चयकरमानो ॥

साखी ।

सोई भेद बताइये, जो मैं लागों तीर ।
आवागवन निवारिये, जमको कागद चीर ॥

सतगुरु वचन ।

रमैनी ।

धर्मदास जो तुम मन इच्छा । देऊँ सारशब्दकी दिच्छा॥
तुमचलिजाउभवनतजिजबहीं ।गुरुहिबूझआवोपुनितबहीं॥
जो तोहिं गुरु ना कहै संदेशा । तब हम तुम्हें देब उपदेशा॥
हमहूँ तो सतगुरु पहँजाई । प्रीति तुम्हारी उन्हें सुनाई ॥
जब सतगुरुकी आज्ञा मोहीं।सत्यसार समझावों तोहीं ॥
बिन आज्ञा गुरु कहों न बाता। हम मँगता वे हमरे दाता॥
कपट रूप जिन बूझहु मोहीं। अजर अमर कर राखोंतोहीं॥
सो तुम सत्त सत्त कर मानों। वचन हमार एक पहिचानों॥
अहो साहु अब आज्ञा पाऊँ।सतगुरुसे आशिषलै आऊँ॥
आज्ञा लै पुनि चले तुरंता। जिमि सरोजसम्पुट रवि अंता॥

साखी ।

धर्मदास मुरझाय, भोजन छीन मलीन मन ।
बैठे जहँ तहँ जाय, रैनदिवस होइ विकल तन ॥

धर्मदासवचन।

रमैनी ।

पहर एकलों चितवहिं ठाढे।उपजी प्रीति हृदय अतिगाढे॥
धरमदास चलिगे गुरु पाहीं । रूपदास के आश्रम जाहीं॥
मिलै जो भेष अनेकन बूझै । बानी बचन कहूँ नहिंसूझै ॥
पहुँचे जाय गुरूके धामा । होय अधीन कीनो परनामा ॥

तुमगुरुदेवशिष्यहमआहीं । परिचयज्ञान कहो हम पाहीं ॥
जीव मुक्त कौने बिधि होई । तन छूटे कहँ जाय समोई ॥
आदिब्रह्म सो कहां रहाई । यह घटमें को बोलत आही ॥
हम को हैं को हम घट होई।जग करता प्रभु कहँवाँ सोई ॥
रामनाम कहँवाँते आवा । नरक स्वर्ग जग कौन बनावा॥
ताकर भेद कहो प्रभुराई । केहिंबिधि काह करोंसेवकाई॥

साखी ।

सत्त असत सबहीं कहो, पूँछतहौं गुरु तोहिं ।
मनको संशय मेटिके, नाम बतावो मोहिं ॥

रूपदासवचन ।

रमैनी ।

धरमदास तुम भयेअज्ञाना।कौनसिखाय तोहि अस ज्ञाना॥
सुमिरहु राम कृष्ण भगवंता । ठाकुर सेवा कर बुधवंता ॥
विष्णुपंजरलक्ष्मी नारायण । प्रतिमापूजा मुक्तिपरायण ॥
मनबिच सुमिरहु कुंजविहारी । है बैकुंठ जीव बनवारी ॥
पुरुषोत्तमपुर बेगि सिधावो । जगन्नाथ परसी घर आवो ॥
गया गोमती काशी थाना । तीर्थ नहाय पुण्य है दाना ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश गोसाँई । यह तीनों जग रक्षक आहीं ॥
सूर्य देवताको जल देहू । इनसे सकल मनोरथ लेहू ॥
निराकार निर्गुन अविनासी । जोतसरूप सुन्नके वासी ॥
ताहि पुरुषको सुमिरहु नामा । तनछूटै पहुँचै निजधामा॥

साखी ।

बाना बनाहै आदि का, करम भया विस्तार ।
जीव शीव एकै भया, अकह कहै को पार ॥

धरमदासवचन ।

रमैनी ।

धर्मदास बूझेगुरुबाता । क्रोधित होयके कहो न ताता ॥
जिव रक्षक सो कहाँ रहाई । निराकार जिव भक्षक भाई ॥
लक्ष जीव नित खाय निरंजन । तिरसुत ताहि करैबहुगंजन ॥
तीनों देव परे मुखकाला । सुर नर मुनि सब करेबिहाला ॥
सूर्य चंद्रमा देव कहावै । इन सबको घर काल सतावै ॥
किरतमभजै जो इन नहिं छूटै । सत्तनामविनजमघर लूटै ॥
जहँ लग यह जगदेखो भाई । परलय समय नाशहोयजाई ॥
पाप पुण्य जम जाल पसारा । करम बन्ध भरमै संसारा ॥
नर बपुरेकी कौन चलावै । कौन ठाँव जिव सूचित पावै ॥
तीनलोक बैकुण्ठ नसाई । अस्थिर घर मोहिं देहु बताई ॥

साखी ।

पानी पवन पिरथी नहीं, नहिं पावक आकाश ।
करता भेद बताइये, कैसे कीन प्रकाश ॥

रूपदासवचन ।

रमैनी ।

राम राम कहि कर पछताना । धरमदासको कैसो ज्ञाना ॥
धरमदास लखि चकृत तोहीं । यह कुछ बूझि परै नहिंमोहीं ॥

कौने बुद्धि तोर हरि लीना।बचन अशुद्ध सिखावनदीना॥
तीन लोकके करता जोई। ताहि भाषि जमराजा सोई॥
ब्रह्मा विष्णु महेश गोसाँई।ताहि कहतहौ जमघरि खाई॥
चाँद सुरज तारागन आहीं।तिनको कहो काल मुखजाहीं॥
तिनपुर मैं वैकुण्ठ सरिष्टा। सो तुम भाषत अहै निकिष्टा॥
तीरथ वरत पुण्य जोभाई।तिमि जमजाल ताहि ठहिराई॥
और अधिक सोकहा बताई।जोजाना सोनाह छिपाई॥
जिनतोहि अस बुध दीनो भाई।तिनहीको तुम सेवहुजाई॥

साखी।

हम सरगुन सेवा करें, निरगुन भेद न जान।
धरमदास भावै नहीं, खोज करो गुरुआन॥

धरमदासवचन।

रमैनी।

धरमदास बिनवै करजोरी। ढिठाय बकसो प्रभु मोरी॥
मनमें कछू न सोचो आना। हमसेत्रकतुमगुरुकरजाना॥
संशय रहा अधिक तन छाई। निकट तुमारे बूझन आई॥
तुमहौ गुरु वे सतगुरु मोरा। उन हमरोमन मंगल तोरा॥
तुमगुरुकीनअभक्ष छोडावा।उनमोहिंअगमगम्यबतलावा॥
ऐसे सतगुरुकी बलिहारी। भव सागरसे लेइ उबारी॥
हम तेहि पद अब सेउब जाई।जिन यहपथ मोहिं बतलाई॥
धरमदास कीनो परनामा।मथुरा मग पहुँचे निज ग्रामा॥

केतिकदिना यही विध वीता।धरमदास चितबाढी प्रीता ॥
बहुतदिवसभे प्रभुनहिं आये । सेवक कौनराखिबिलमाये॥

साखी ।

सुरति चहै प्रभु दरसको, मन चित बुधि हरलीन ।
ना जानैं कब मिलैंगे, साहेब सन्त प्रवीन ॥

रमैनी ।

एक दिवस प्रभु ध्यान लगावा।सुरति सनेह प्रसाद बनावा॥
तृष्णा ब्यापी क्षुधा सतावै । चौक लीप जेवनार बनावै ॥
भई तुरंत विलम्ब न लाई । लकडी धोयके फेरि मँगाई ॥
चौकामें आसनजो कीन्हा। छानछान जल अदहन दीना॥
अतिपवित्रसे बनी रसोई । सालिगरामका भोजन होई ॥
चौका माहिं अचंभो भाई । बहु चींटी चूल्हे झुरकाई ॥
लकडी चिंउटी उठी अपारा । अंड सहित अग्निमें जारा ॥
अगुन छगुन चितकरै बडाई।भात सकल चिउँटी होइजाई॥
मनमें फिकिर भई बहुतेरा । उपजै विनसै जीव घनेरा ॥
धर्मन देख बहुत अकुलाने ।महापाप लखि मनहि झुराने॥

साखी ।

धरमदासको दुख भया,हरि हरि करत पुकार ।
जिउ अनेक परलय भये, अस खावे धिक्कार ॥

रमैनी ।

हरखि भई विस्मय तन छाई।केहि विधि कहांसे चींटीआई॥
लकडीको जल माहिं बुझाई।चूल्ह बुझाइ बहुत जलनाई ॥

जो कुछ जरी सो जरि गइ भाई।जो बाचै सो लेहु बचाई॥
जीव घात होइगा अधिकाई। यह भोजन हम नाहीं खाई॥
जिन्दा रूप धरे प्रभुराई। वृक्ष एक तरि आसन लाई॥
आसन अधर देहनहिं छाया।अविगति लीला गुप्त रहाया॥
तब मनमें यह बूझ कराई। यह भोजन लैजिन्दा खाई॥
तत छिन धर्मन जिन्दहि टेरा। तुम प्रसाद लेहु यहि वेरा॥
जिंदा आय ठाढ पुनिभयऊ।पहरएकमुखचितवनकियऊ॥
धर्मदास दीनों परसादा। तब जिंदा कीनो सम्बादा॥

साखी।

जिन्द रूप साहेब मिले, मेटा भरम विकार।
कर्म जँजीरा काटिके, संशय दिया निकार॥

जिन्दावचन।

रमैनी।

धर्मदास तुम चतुर सुजाना। जीव दया काहे ना जाना॥
मति तुमार कस गै बौराई। दया धर्म हिरदे बिसराई॥
अरे साहु कस धरो छिपाई। चूल्हे मां चिउटीझुरकाई॥
कीना नेम अनेक अचारा। लकडी धोय रच्यो ज्योंनारा॥
निरख परखतुम कहे न लीना।ना तुमरे देवता कहिदीना॥
घात कीन तुम जीव अनेका।सो प्रसाद हमरे सिरटेका॥
जब लग जीव दया नहिं आवै।तीरथ भरमैं जन्म गँमावै॥
पूजै पाहन भूखन मरई। आतमघात किये ना तरई॥

अस नर होवै वधिक समाना।पढ़ै काल मुखपढत पुराना।
दशरथसुत श्रीराम कहाये। तिनहू जीव अनेक सताये॥

साखी।

त्रेतायुगमें बालिको, वैर देह धरि लीन।
जिन जिन जीवन मारिया, तिन सब बदला लीन॥

रमैनी।

निराकार जेहि वेद बखाना। सो कालौको मरम न जाना॥
तिनके सुत हैं तीनो देवा। सब जग करै कालकी सेवा॥
त्रिगुणजालसबजगतफँदाना।गहै नअविचलपुरुषअमाना॥
जाकर यह जगभक्ति कराहीं। जमदै धोखा फंद डराहीं॥
प्रथमै भये असुर जमराई। बहुत कष्ट जीवनको लाई॥
जीवन बहुविधि कीन पुकारा।दूसर कला काल पुनधारा॥
जीव जानि यह धनी हमारा।धर अवतार असुर संहारा॥
प्रभुता देखि धरै विश्वासा। अंतकाल पुनि करै गिरासा॥
काल तो भेष दयाल बनावै। दयाहढायके घात करावै॥
वानी वचन न बूझै एका। विनसै जीव करमके टेका॥

साखी।

ऐसो काल कुकाल, सपनेहु दया न जानिया।
लख चौरासी डार, जीव करै सनमानिया॥

रमैनी।

द्वापर देखा कृष्णकी रीती। धर्मदास यह नीति अनीति॥
अर्जुनकहि तिन दयाढढावा।तेहि पीछे बहुबँध्योअथावा॥

जीवघातकर दोष लगावा । पण्डवका बहु काल सतावा ॥
वीर सूरमा गये हेराई । छल अनेक कीनो जमराई ॥
बहु गञ्जन जीवनको कीन्हा।ताको कहैं मुक्त हरि दीना॥
पतिव्रता विंदाव्रत धारा । तेहि शाप पाहन अवतारा ॥
बलिसों छलबल कीन बहूता। पुत्र तासु कीनो अजगूता॥
छल बुध दीनों ताहि पताला।कोइ नालखै प्रपंचयकाला॥
तीनों लोकतीनों डिगकीना।आधा डिगनृपदान न दीना॥
देहु नृप पुनि आधा पाऊ । नहीं तो पुन्न प्रभाव नसाऊ॥

साखी ।

करो दान तुम नृपतिजी, ऐसे चतुर सुजान ।
महिमा तुमरी होयगी, नहीं जगतमें हान ॥

रमैनी ।

तबलै पीठ नाप उन दीना । हरिने ताहि पतालैं कीना ॥
आँधर जीव देख नहिं चीन्हा।कहैंमुक्त मारग हमकीन्हा॥
तासों कहो लाभ किमि होई । तेहि सेवै जो जाय बिगोई॥
औ हरिचंदकेर जस लेखा।धरमदास चित करो विवेका॥
जती सती त्यागी बहुभयऊ।सबको कालविगुरचनकियऊ॥
काहूको व्रत दृढ नहिं राखा। मुक्तिनके दाता नर भाखा॥
स्वर्गहि धोख नरक सबजाहीं । सारशब्द कोइचीन्हतनाहीं॥
पाण्डव सम जग को व्रतधारी।नरक वास ताका लैडारी॥
नर्कवास नहिं छूटै भाई । महानर्क भग जेठरी खाई ॥
यह संसार बनो दुखदाई । माया फाँसमें आन फँसाई ॥

साखी ।

करनी भोगै आपनी, फेरि धरै अवतार ।
जीव विचारा क्या करै, छुटै न बारम्बार ॥

रमैनी ।

भक्त अनेक जगतमाँ भयऊ । ताका तो वैकुंठ न दयऊ ॥
जगआँधर हिय गमनहिं कीना । सबैआसवैकुंठहि दीना॥
विष्णु सरीके जग कोइ नाहीं । बहू भगत किमि बरनोंताहीं॥
करमके बस पुनि नरक भोगावै । ते वैकुंठ वासनहिं पावै ॥
सो वैकुंठ चाहि नर प्रानी।यह जम छल विलँय पहिचानी॥
जो जस करम करै संसारा । सो भुगतै चौरासी धारा ॥
मानुष जनमबड़े तप होई । नाम बिहून झूठ तन खोई ॥
नर्कनिवारन नाम जो आहीं । मूरुख लखै ताहिकोनाहीं ॥
तातें जम धरि फेरि सतावै । नाना जोइन जीव भटकावै॥
विलँय सारशब्द पहिचानै । सतगुरु संगसतनाम समानै॥

साखी ।

सुनि धर्मदास सुजान, सत्यशब्द पहिचान लो ।
और सकल जमजाल,सतगुरु सम नहिं आनको ॥

धर्मदासवचन ।

रमैनी ।

धरमदास चित संशय आना।यहको अहै हृदय अनुमाना॥
कहा कहूँ जिंदाका भाई । जात मलेच्छ कथै चतुराई ॥

के करता मैं के भगवाना । नाम मोर इन कैसे जाना ॥
हे जिंदामोहिंअचरजभयऊ।लीलादेखिथकितहोयगयऊ ॥
केतिकलखीसमुझनहिंआवा । यहलीलातुमजाननपावा ॥
चिउँटी जरी सही प्रभु मोते । सो अदृष्ट नहिं अंतर तुमते॥
सो कौने बिधजानेउ ताता।और प्रसाद चींटी होयजाता॥
जोर पानकर बूझौं स्वामी । कहो कृपा करि अंतर्यामी ॥
साहेब नाम काह तुम आहीं।पर्चय नाम कहो मोहिंपाहीं॥
औ सतगुरु तुमकेका कहऊ।वोह प्रभु कौने देशतुम रहऊ॥

साखी ।

कौन देश साहेब बसे, कौन निरंजन जाल ।
कौन उपाय है जीवका, पडै नहीं मुखकाल ॥

जिन्दा वचन ।

रमैनी ।

धरमदास जो बूझे मोहीं । सुनो सुरति धर कहौं मैं तोहीं॥
धरमदास यह सतगुरु लीला।धन सतगुरु जिनखेलगहेला॥
जिन्दा अहे नाम सुन मोरा । जिन्दा भेष खोज कर तोरा॥
हमसतगुरुके सेवकआहीं । सत्यलोकमें सदा रहाहीं ॥
सकल जीवके रक्षक सोई । सतगुरु भक्त काज जिउ होई॥
सतगुरु सत्त कबीरहि आहीं । गुप्त रहैकोइ चीन्हत नाहीं॥
सतगुरु आय जक्त पगधारी।दासातन धरि शब्द पुकारी॥

काशीरहे परखीहम पावा। सत्य नाम उन मोहिं लखावा॥
जमराजाके छल हम चीन्हा। निरखि परखि भे जमते भीना
तीनलोक जो काल सतावै। ताको सब जग ध्यान लगावै॥

साखी।

धोखा धोखी आसमें, बूड़ि मुवा संसार।
जीवन पड़गये करमबश, कब होवै निस्तार॥

धर्मदासवचन।

रमैनी।

हे साहेब तुमको सिर नावा। तुमते बहु परिचय हम पावा॥
भेष तीन दर्शन दिये मोहीं। तीनों भेषमैं जानौं तोहीं॥
सतगुरुप्रथमदरशमोहिंदीना। मोकाआय कृतारथकीना॥
भेख छिपाइ बहुरि वै आये। सार वचनउन मोहिं छिपाये॥
तीसर तुम आये तनधारी। हम हैं तुमरे दरस भिखारी॥
तुमतो मोहिं परमसुख दीन्हा। भेदअभेद सबै हमचीन्हा॥
बचन एक प्रभु कहौं विलोई। कहो दास पद धरो न गोई॥
चिउँटी जरी सहीमोहि पाहीं। सो प्रसाद तुमचाखो नाहीं॥
औरौं कबहुँ होय जो ऐसे। तो प्रभु कहो बनैधौं कैसे॥
चेत अचेत पाँव तर परई। तौ वह दास कवन विधि तरई॥

साखी।

उन साहेब तुम एकहौ, दूसर भेद न जान।
सुनत हिया पुलकित भयो, बचन अमोलक मान॥

जिन्दावचन।

रमैनी।

नाम पान चर्णोदक सीता। कहैं कबीर भक्ति दृढ़ कीता॥
गुरुसेवा संतन सनमाना। जिउ दयाल हैं मोक्ष अमाना॥
जग महँ जीव घाट बहुतेरा। होय बधिक सिर पाप घनेरा॥
दया नलावै कर जिव घाता। खेल शिकारमगन मन माता॥
मार मार तन लरत अहारा। बहुतक जिव पलैय करडारा॥
जीवघात बहुतै दुख पावै। जनम जनम तेहि काल सतावै॥
काल देह धरि बिष्ठाखाहीं। जनम अनेक न बिष्ठा माहीं॥
शूकर स्वान जनम तेहिपावै। मीन मास मद ताका भावै॥
सांध देव भक्ष अंकुर आहीं। मीन मास मद राक्षस खाहीं॥
कोटिक जप तप पुन्न कराहीं। जीव दयाबिनमुक्ति न पाहीं॥

साखी।

तज अभक्ष अहार, जीव दया चितमें धरै।
उतरै भवजल पार, हंस गवन साहेब करै॥

रमैनी।

धरमदास निःसंशय रहहू। सतगुरु ध्यान चित्तमें धरहू॥
जान जीव कबहीं नहिं मारो। बहुरसाँस दाया उर धारो॥
साधन सेवा तनमन वारो। नाम ध्यान धरि काजसँवारो॥
साधन चरनकेर परतापू। मिटै दोष दुख करम जोदापू॥
सत्यनामको चितमें धरहू। जीवन मुक्त अभवजल तरहू॥

तीर्थ वर्त्त बहुकरम कराहीं ।सत भक्ती बिन तरिये नाहीं॥
कोटि तिरथपद संतनिवासा। अंध जीवनाहीं विसवासा ॥
गुरुते द्रोह तजै बकवादा । गुरु निन्दै नहिं पावै स्वादा॥
सतगुरु चरनोदक पियलेई । निश्चय लोक पयाना देई ॥
ताकर फल कछुबरनि न जाई ।गहि विश्वास करै सेवकाई॥

साखी ।

जे गृह संतन पग परै, सो सतलोक निवास ।
गुरुही ब्रह्म अखण्ड है, सतगुरु पद विसवास ॥

रमैनी ।

वचन हमारो हिरदे धरहू ।संशयतजि कुछ भोजन करहू॥
आतम कष्ट कबहुँ ना दीजे। रुचित प्रेमरस अमृतपीजे ॥
हरी ना मिलै अन्नके छाँड़े। हरि ना मिलै हटनगृह मांड़े ॥
हरि ना मिलै द्वार घरत्यागे।हरि ना मिलैरैन दिशिजागे ॥
हरि ना मिलै संखधुनि गाजे।हरि ना मिलैआरतीसाजे ॥
हरि ना मिलैं कथाकेबांचे।हरि ना मिलैं भक्ति विनसांचे॥
ऐसे हरिहैं दीन दयाला । सेवक जान करें कृपाला ॥
सब जीवनके हैं रखवारा । अन्तर्यामी हैं संसारा ॥
सो साहेब कस बंधनपरिया ।भूखप्यासबनमध्येफिरिया॥
मानुषमूढ वचन नहिं मानै । अकरमकर्म नहीं पहिंचानै ॥

साखी ।

अजर अमर वह लोक है, दया धमकी खानि ।
धरमदास गहु प्रेम पद, सत्तपुरुष पहिचानि ॥

रमैनी ।

धर्मदास तुमको समझाऊं। सत्तकारका भेद बताऊं ॥
हंस दशा अस होवै भाई । नाम गहे सतगुरु पद पाई ॥
जहां फूल तहँ आवै बासा । जहँ साहेबतहँ संत निवासा ॥
एक तत्त मन नाम समावै । दाया छिमा सत्त मन लावै ॥
प्रेम सहित साहेब चित लाई । सत्तनाम गहिलोकहिजाई ॥
सत्तनाम सो बिनसे नाहीं। तिरगुन जालसे न्यारा आहीं ॥
तिरगुन त्याग चौथापद भेंटै । जनममरनको संशयमेटै ॥
चौथापदसतनामअमाना । विरलाकरपद निश्चल ध्याना ॥
सत्तनाम है सार अनूपा। प्रेम प्रीति गुरु दरसै रूपा ॥
नखशिख सतपद दरसैजबहीं।जीव जठरआवैनहिंकबहीं ॥

साखी ।

सतलोक सतपुरुष है, जिव कायाके बीर ।
लिख साँचा हो भरम तजि, बूझै बचन कबीर ॥

रमैनी ।

सतपदजिन एकै मन लावा।शब्ददरस जिन निश्चयपावा ॥
सुरति निरति सतगुरु पद परसै।षोड़शभानुचंद्रछबिदरसै ॥
हंसपती सिंगासन सारा । हंसन मिलि सुख सदा अहारा ॥
पुरुषदरसलोचनछबिजाही। पुरुषबचनहियसुनतिअघाही ॥
अंध कालतहँ कबहुँ न होई । सदा अंजोर अमरपुरसोई ॥
दीप अठासी सहस रहाही । हंसा निश्चल राज कराही ॥
निराकार जम तहाँ न जाई । तिरदेवाकी कौन चलाई ॥

सतगुरु शब्द गहै जो कोई। ताहि देशको पहुँचै सोई ॥
सार शब्द संतनसे लूटै। आवागवन पलकमें छूटै ॥
असुर अभक्षसों रहै नियारा।तज कुसंग सतसंग पियारा॥

साखी।

बिरलै जीव पतंग, देख जोत दीपक जरै।
निर्नय है सतसंग, कहै कबीर जीतै मरै ॥

रमैनी।

धरमदास तुम दरशन पावा।शब्द गहै सो जीव मुकतावा॥
जग फंदा तब निश्चय छूटै। जम राजासों तिनका टूटै ॥
अमी अंकपर्वाना पावहु।सुमिरत नाम ध्यान चितलावहु॥
एहिते आसा औ सबछाँड़ो।सतगुरुचरननेहि चित माँड़ो॥
नाम कबीर जपो दिनराती।तजहु भरम करम कुलजाती॥
प्रतिमा धोखादूरि बहावो।आतमपूजि नाम चित लावो॥
तब जमराजा तोहिं न पाई। नाम परताप काल मुरझाई॥
और जगतका झूँठा धंधा। आस लगाय गिरै नर अंधा॥
खप खपके केते बिललावैं। करमहीन नर आवैं जावैं ॥
होवै जीव काजजब तोरा। निश्चय बचन मान दृढ़ मोरा॥

साखी।

धरमदास लेउ जान,सुन्नसरूप मनको अहै।
जिन्दा वचन प्रमान,रूपरेख बिन कस गहै ॥

धरमदासवचन।

रमैनी।

हे साहेब मैं तुम पदधरिहौं। तुमते कछू न दुबिधाकरिहौं ॥
अबमोहिचीन्हिपरीजमबाजी। तुमतें भया मोर मनराजी ॥
मोरे हिय परतीत समाऊ। भूले जीव होय मुक्ताऊ ॥
तुमहीं सत्तकबीर हौ स्वामी। कृपा करहु प्रभु अंतर्यामी ॥
ए प्रभु देव परवाना मोहीं। जम तृनतोरि भजौं मैं तोहीं ॥
मोरे नहीं औरसे कामा। निसदिनसुमिरौं सतगुरु नामा ॥
प्रतिमा मूरति देब बहाई। सतगुरु भक्ति करब चितलाई ॥
अरब खरब सर्बस सब तुमहीं। तुरत उबारो बूडत हमहीं ॥
संतन सेवा दृढ़ कर करिहौं। वचनसिखापन निश्चयधरिहौं ॥
जो तुम कहो करौं मैं सोई। हे प्रभु दुतियाकबहुँ न होई ॥

साखी।

नामभेद परगासिये, उतर जाय सिर भार।
बूड़त हंस उबारिये, जुगन जुगन उद्धार ॥

जिन्दावचन।

रमैनी।

धरमदास तुमका मुक्ताऊँ। निश्चय जमसे तोहि बचाऊँ ॥
निर अधार सतमानअधारा। शब्द सुरति जगमुक्तिबिचारा ॥
सुरति डोर चढ़ि उतरोपारा। शब्द बिचार करो निर्वारा ॥
दै पर्वाना हंस उबारौं। जनम मरण दुखदारुण टारौं ॥

आज्ञा देहु मोहिं धर्मदासू । हम जावै सतगुरुके पासू ॥
सतगुरुसे आज्ञा लै आई । हंस उबार करौं मुक्ताई ॥
बिना गुरु आज्ञा ना होई । यह परमान उचित है सोई ॥
अपने मनधीरजकर राखो।निस दिन नाम अमीरसचाखो ॥
आउब जल्द बिलम्ब न पाई । साहेबसे पर्वाना लाई ॥
लै परवाना करो सुप्रीती । कहैं कबीर चलो जम जीती ॥

साखी ।

धर्मदास मत धीर, राखो आसा नामकी ।
तन मन धारो धीर, होइ हो साहबधामकी ॥

धर्मदासवचन ।

रमैनी ।

हे प्रभु तोहि जान ना देहौं । नहीं आवो तो प्रान गवैहौं ॥
हाथरतनमन केहिविध डारूँ।यहमूरखनिजकाज बिगारूँ ॥
मोरे प्रानपिआर तुम आहू । केहि कारन अंते चलिजाहू ॥
यह कहि धरमदास पल लावा।सतगुरु गुप्तभयेतहिठावा ॥
धरमदास पुहुमें परधारे । सतगुरु कहि बहुकीन पुकारे ॥
मो सम को जग अहै अभागी ।छुटे न देह ठगौरी लागी ॥
जस फन मन बिच जात हेराई।बिकलफिरेजितकित बौराई ॥
यहि हालसतगुरु बिन मोरा।कस पल दिह्यों मंदमतिमोरा ॥
धरमदास मन धीरज कीना।भली शिखावन जिन्दादीना ॥
जिन्दा रूप यही हम देखा।कहतवचनमुखबहुत विवेका ॥

साखी ।

सत्त सत्त सबही कही, जान पड़ी निजसार ।
जिन्द नहीं वह पुरुष है, भाषत वचन अपार ॥

रमैनी ।

धर्मदास बाँधो चलि आये। बालगोपाल सहित सुखपाये॥
कितिक दिवस मन कीनविचारा। देऊँ इच्छा कर भंडारा ॥
साहेब संत सनेही आहीं । संतन तजि अंते नहिं जाहीं ॥
अस हियठानि भवनचलिगयऊ। संतप्रसादचेतवनकियऊ॥
संतसमाज जहाँ गमपाई । तहँ लगिसबका न्योतबोलाई॥
आये बैरागी ब्रह्मचारी। जोगी जंगम दूधाधारी ॥
बहुतपसी आये संन्यासी । जटाभभूत सुन्न विश्वासी ॥
भेषछिपाइ साहेब पुनि आये। धरमदास गृहआसनलाये॥
बाजै ताल मृदंग निसाना। शंख नाद धुनि करतबजाना॥
भाव भक्ति सबहिनको कीना। इच्छा भोजन सबकोदीना॥

साखी ।

करी दण्डवत जोर कर, संत समागम जहँ अहो ।
सत्तपुरुष केहि ठौर, सत्तलोक महिमा कहो ॥

रमैनी ।

सबको ज्ञान परखिधर्मदासा ।सुनैध्यानधरि हृदयन बासा॥
कोई तीरथ मुरति बतावै । कोई रामगोपालै गावै ॥
कोई केवल नाम दृढावै । कोई शंकर विष्णू धावै ॥

कोई कहै त्रिगुण आराधो । कोई कहै बरत तन साधो॥
कोई कहै प्रतिमा सेवा । कोई कहै तिरथ तप मेवा ॥
श्रीकृष्ण संन्यास बतावै । परमहंस अविनाशी गावै ॥
जोगी अलख पुरुष उच्चरई।जिन्द अल्प खोदाय सुमिरई॥
किरतम भक्ति सबै दृढावै । सत्यसार पद नहीं लखावै॥
तब अकुलाय साँस धर जोवै । परगट नहीं गुप्त हियरोवै॥
फिरत आश्रम होतनिरासा।चौमुखचितवहिं परमउदासा॥

साखी ।

एक भाँति कोइ ना कहै, नानाबिधि परिचण्ड ।
धर्मदास बिश्वास बिन, सब जाना पाखण्ड ॥

रमैनी ।

समुझ पडी सबके मनमाहीं । जिंदमता काहूपै नाहीं ॥
यह तो करम काण्ड दिखलावैं । नाना रूपभेष बतलावैं॥
सार बचन मुख कहै न कोई । अंतरगतकी मैल न धोई॥
उनको बचन महारस बानी।जिंद पीर कोइ आलिम आनी॥
वह साहब का ज्ञानहैन्यारा।सुनतलगैमनअधिकपियारा॥
जाय कीन संतन सनमाना । यथा जोग पूज परधाना ॥
बिदा कीन संतन कर जोरी।बखसहु चूकजो अवगुनमोरी॥
सबय संतमिलबाट सिधाये।धरमदास सतगुरु चितलाये॥
जिन्दा बचनयाद जब कीन्हा।अंतरगतमें बहुसुख चीन्हा॥
ऐसे बरस दिनाघर रहेऊ । फेरि सुरत काशीकी कियऊ॥

साखी ।

सब भेषनमें ढूँढिया, पुरी न मनकी आस ।
मनमलीन निरखत चले, जिंददेश जहँ बास ॥

रमैनी ।

धरमदास काशी चलि आये।चहुँदिसदरसबहुत पगधाये॥
दिसा एक पुनिचितवन कीन्हा।मूरतएकभिन्नतहँ चीन्हा॥
भक्तरूप मुखअमृत वानी । नाम कबीर जगत गुरुज्ञानी॥
बिमल बिमलसाखी पद गावै।जुरी भीर सबको समझावै॥
पंडित ज्ञानी सबहि हरावै । थाह कबीर कोई ना पावै ॥
धरमदास तहँ निरखैं ठाढे । चरचा करै बहुतबिधि गाढे॥
अपने मनमें कीन बिचारा । इनका ज्ञान महाटकसारा ॥
दोऊ दिनकी बात सुनावैं । इनका भेद न कोई पावैं ॥
कबहुं भगतकबहूं होय जिन्दा। दोनों राह चलावै बन्दा॥
धरमदास चीन्हा मनमाना।जिन्द पीरते और न आना॥

साखी ।

धरमदास निरखत भये, साध मतागम्भीर ।
शब्द अखंडित सुननको, जुरि आई बहुभीर ॥

सतगुरुवचन ।

रमैनी ।

प्रगटी ज्ञान रतनकी खानी । सारशब्दनिज अमृतबानी॥
यह तो घटमें कीन बिचारा। धर्मदासको वदन निहारा॥

अरे महाजन कहँ पगधारो।छगुन छगुन तुम काहुनिहारो॥
कहिये क्षेम कुशल है नीका । सुरत तुम्हार बहुत हम देखा॥
धरमदासहम तुमको चीन्हा । बहुत दिननमें दरशनदीन्हा॥
बहुत कै ज्ञान किया हम तुमहीं । मथुरामें तुमभेंटे जबहीं ॥
भगतरूपतुम हमजिन्दकेरा । सुधिकरिदेख सुनौ मतिधीरा
धरमदास तुमसंत सुहेला । मोहिंदरशनको कीने मेला ॥
इच्छा सुफल भयो शुभ तोरा । अब तुम दर्शन पायो मोरा
धरमदासनिश्चयममबानी।कितहुँ न जाव सत्य हियमानी ॥

साखी ।

भले किये दरशन दिये, बहुरि मिले तुम आय ।
जो अबकी हमसे मिलै,जुगजुग बिछुड़ न जाय ॥

धर्मदासबचन ।

रमैनी ।

सुनिधर्मदास हिये सुखभयऊ।सन्मुखधाय पाँव गहिपरऊ॥
धाय चरनगहिअतिअनुरागा।बूंदपायचात्रिकजिमिपागा॥
प्रेमसहितउठि अँग भरिलीना । दायासिंधुचित्तभरदीना॥
धरमदासको सुखभा भारी । धन करताबलिजाउँ तुम्हारी॥
जुग पद गहे प्रीति चित लागी।हेसतगुरु मोहिंकीनसुभागी॥
हे प्रभु दरसन जी नहिं पावत।तो निश्चय हम प्रान गँवावत॥
जो कोई चीन्हैं चितमन लाई ।संशय ठौर पाप मिटजाई॥
हे साहेब पूछौं करजोरी । सांच वस्तु नहिं राखेहु चोरी ॥

कपट भेद हमसे तुम कीना । इतने दिवस दरस नहिंदीना॥
भूलभरमबहुतैदिन रहिया।विरहबियोगजाय ना सहिया ॥

साखी ।

प्रथमै मोहिं मथुरामिले, बहुत बाद हम कीन ।
सब सांची सांची कही,मन हमार हर लीन ॥

सतगुरुवचन ।

रमैनी ।

धर्मदास चेतौ चितलाई । पांचतत्व अब तुम्हें चिन्हाई॥
पावक पिरथी पानी पवना । सरबमूल बोलत है तवना ॥
रजो सतो तम तिरगुन आहीं । सो हमहीं कोइ दूसर नाहीं॥
सब हममें निज हमरी साजा ।पिरथी संजोग बीज उपराजा
पानी पवन सरूप हमारा । आवत जात तत्त असवारा ॥
तत हमार हम तत्ते माहीं । यामें फेरफार कुछ नाहीं ॥
इच्छासे घर मानुष रूपा । आदि अंतमें एक सरूपा ॥
धरमदास निरखोनिज नैना । व्यापक सत्तपुरुष सुखचैना॥
आपहि करता सत्तकबीरा । दया धरम भगती गम्भीरा ॥
जो जो इच्छा भई हमारी । सकल बीज उपजै उजियारी ॥

साखी ।

यह स्वभाव सब तत्तका, इच्छा बीज हमार ।
जो चाहा सो सब भया,चीन्हों सिरजनहार ॥

धर्मदासवचन ।

रमैनी ।

साहेब आदि पुरुष हो जोई । तुमते करता और न कोई ॥
भली बनी हम दरसन पावा।पेड़ मूल सगरौ चलिआवा ॥
बीज बृक्ष तुमहीं जो आहीं । सब विस्तार तुम्हारे माहीं ॥
सत्तकबीर निजनाम तुम्हारो।प्रबल हंस बड़ भाग हमारो॥
करता आदि पुरुष हम पावा । मन पसार पूछौंजोभावा ॥
तुमते अधिक कौन है देवा।अब हम करब तुम्हारी सेवा॥
सत्तगुरुसम नहिं देखों आना।पूजसिलामम जन्मसिराना॥
कबहीं कहो न मुक्त सँदेशा । तुम मेटे हौ कालकलेशा ॥
अब प्रभु कीजे वेगि तुरंता । हंस उबारो अविचल संता॥
जमसो सतगुरु देहु बचाई । विछुड़े हंस लेहु मुक्ताई ॥

साखी ।

साहेब समरथ जक्तमें, बन्दीछोर कहाय ।
दे परवाना सरनहूँ, दीजे रूप लखाय ॥

सतगुरुवचन ।

रमैनी ।

धरमदास चाहो परवाना । बाँधवगढकर साज समाना ॥
चंदन चौका पर्मल लावो । कलसा पल्लव पाँच धरावो ॥
पान नारियल उत्तम लाना । मेवा अष्ट और मिष्टाना ॥
सेत पुष्प कदली पनवारा । आनहु बेगि न लावो वारा॥

सेतसिंघासन धरो बनाई। झारी दल कपूर भरलाई ॥
घृत बसन पूंगीफल चारू। साजो थार जोत पुनि वारू॥
धरम न जो इतना नहिं होई।गुरुनिज सक्तकरैपुनिसोई ॥
हम निःइच्छा चाहत नाहीं। है मरजाद गुरुसेवा आहीं ॥
साधु संतको लेहु बुलाई। मंगल चारु करो चितलाई ॥
यह विधिसे तुमकरो समाजा।तब होवै तुम्हरोजिव काजा॥

साखी।

सतगुरु साहेब कबीर, बांधवगढको पग दियो ।
धर्मदास संग वीर, मन मलीन हिय सुख भयो ॥

उपदेश वचन ।

रमैनी।

धरमदास पहुँचे गृह आई। सामग्री उपदेश मँगाई ॥
चौकासाज थार रुचि धरहू। सर्वविधान शब्द तनकरहू॥
पुनि साहेबके चरन पखारा। कर आरति आसन बैठारा॥
नरियर मोर हंस गहिलीना। सतसुकृतका मालुमकीन्हा॥
रूपहंसका दियो लखाई। जाकी शोभा वरनि न जाई ॥
प्रेमसहित चरणोदक लीन्हा।शब्द सुरतिमें गहिचितदीन्हा॥
जम तृणतोरदीन परवाना। लै प्रसाद हिरदय सुखमाना॥
सात दण्डवत कीन्हो जबहीं।मस्तव हाथ दीन प्रभुतबहीं ॥
धरमदास चित हरखसमाना।उपजा हिरदय निर्भयज्ञाना॥
सतगुरुकी जबसुरतिसमानी।बिनस्योकरमभरमजभखानी॥

साखी।

सत्तनाम सतगुरु धनी, सतसाहेब सरदा।
सारशब्द हंसा गहो, छोडा भरम विकार ॥

सतगुरुवचन।

रमैनी।

जब गुरु पूर मिलै मतसारा। उदयज्ञान रवि छावै तारा॥
तब उँजियार होय घर भाई।धोखभरम सब जाय नसाई॥
तातें गुरुपद सुरति समावै।सतगुरुध्यान अभयपद पावै॥
गुरुतें अधिक काह ठहिराई।मुक्तिपंथ गुरु बिन नहिंपाई॥
रामकृष्ण तीनों पुरराजा। तिन गुरु बंधकीन निजकाजा।
देवऋषी मुनिवर सुख देशा।सबन बंदि गुरु चरनसुरेसा॥
तन धर गोरख काहु न मेटा।गुरुगमसबै सार पद भेंटा॥
मूरुख जीव नहीं गुरुमेला। बिनगुरुजगत कालको चेला॥
गुरुबिन सारज्ञान नहिंपाई।ज्ञानबिना नहिं आपचिन्हाई॥
जोहियआपआपगमनाहीं। तबलगजिव बहुभटकाख हीं॥

साखी।

गुरुकी महिमा अधिकहै, सतगुरु अगम अपार।
शब्द सनेही सिक्ख है, उतर जाय भवपार॥

रमैनी।

धरमदास तुम शब्द विचारो।सर्बमाहिं यकब्रह्म निहारो॥
ब्रह्मदेह धरि जीवसतावै।पाँच सवाद रुचिजिवदुखपावै॥

निज घर डोरी छूटै भाई । जीवरहे मनमति अरुझाई॥
गुरु तो सारशबद बतलावै । जमतें छोडाय जीव मुक्तावै ॥
सतगुरु मिलै डोर घर पावै। पाँच चीन्हि परपंच मिटावै॥
आपहि जीव ब्रह्महै भाई । गुरु परिचय बिन लखा नजाई॥
निःअक्षर लख तत्त बिदेही । सत्तनाम गहुमिल सुख जेही॥
जब लग तनमें ब्रह्म सोहंगा । तबलग रहत न मन बहुरंगा॥
परिचय दया जबै उर आवै । सतगुरु सेव परमपद पावै ॥
पूजहु सरजिव साध अमोला।लहै अभयपद निश्चलमूला ॥

साखी ।

जप तप जग बहु कीनिया, अंत गये सब हार ।
सतगुरु दरस न पाइया, लाद चले जग भार ॥

रमैनी ।

धरमदास सुन आपन करनी।तुम सुकृत आये जिव तरनी ॥
पुरुष पठायो जिसके काजा । तुम परजाल कीन जमराजा॥
तब पूरुष आज्ञा मोहिं कीना।ततक्षिण आयपृथ्वीपगदीना॥
बार अनेकन कीन्ह मिलापू। धरमदास नहिं चेतो आपू ॥
पाहनपूजि ध्यानमन लायो।सतगुरुशब्दचीन्हिनहिंपायो॥
तासु प्रीतितोहिं आनजगावा।नाम प्रताप यही प्रभु लावा॥
जो जिवनामतुम्हारा लैहे । ताहि जीवको काल न खैहे ॥
सतगुरु भक्ति जाहि कुल होई। तरै इकोतर पुरखा सोई ॥
यह संयोग तोहिं हम भेंटा । जन्म मरण दुख दारुनभेंटा॥
धरमदास परखो चितलाई ।विप्र गुप्त तोहिं बरनि सुनाई॥

साखी ।

विप्र गुष्ट जैसे भई, सो सब कहो बुझाय ।
सारबचन निज परखहु, कहि कबीर समुझाय ॥

कथा सर्वानंद ।

रमैनी ।

सर्बानन्द नामद्विजरहेऊ । तासम ज्ञान और नहिं कहेऊ ॥
कहु पंडित सो गुष्ट पसारी ।काहु न जीत गये सब हारी॥
जित चर्चा पंडित सोकीना । ज्ञान जीतपोथी बहुलीना ॥
गुष्ट जीतके जब घर आये।बहुअभिमान गरभ चितलाये॥
माता सों तब बचन उचारा । हे जननी बड़भाग तुम्हारा ॥
हम अस पंडितसुतहैं तोहीं । काहून जीत गुष्टसों मोहीं ॥
सर्बजीत नाम मम धरहू । तिलक जीत मोरे सिर करहू ॥
महि मातासुन पुत्र प्रबीना । सरबजीत तुमकाहम चीना ॥
ए सुत एक मैं बूझौं तोहीं । कहु कबीर जीता की नाहीं ॥
हे जननी तुम ज्ञानहु ताना।कहा सम्बाद जोलहा जाना॥

साखी ।

पंडित कोइ जीते नहिं, ज्ञानी ठहरे नाहिं ।
नाम मोर सब जगतमें, जोलहा बाद बड़ाहिं ॥

रमैनी ।

कह जननी कह वैतोहिज्ञानी।जबजोलहाजीतौबहुबानी ॥
जोलहा जीति आव तुम जबहीं।सर्बजीत हमकहवैतबहीं॥

तुम सिर करब तबै हमटीका। बिनजोलहाजीते बुधफीका॥
कहां कबीर रहैं हो माता । कौन भेष बानी है ताका ॥
हे सुत वै काशी अस्थाना । अविगत लीला कहाबखाना॥
जोलहा नाम कबीर बतावै । भक्ति भेष भल हरगुन गावै ॥
जब जननी बहुते धिक्कारा । बाढा क्रोध हिये विकारा ॥
कीन प्रणाम बहुत्त अभिमाना । काशीका तब कीनपयाना
तहाँ कमालिन जलको गयऊ । पंथबिप्र तेहि बूझे लयऊ॥
हे माता मोहिं कहो बुझाई । कबिरा जोलहा कहाँ रहाई॥

साखी ।

जोलहा नाम कबीर है, घर कौने अस्थान ।
हम आये हैं मिलन कूँ, ताका भेद बखान ॥

रमैनी ।

विहँसिकमालिनकहियकबानी। कोथरगम्मकबीरकोजानी ॥
तीन देव तेहि पुर अधिकाई । ते क़बीर घर गमनहिंपाई॥
सुर नर मुनि औ जहँ लग देवा । वै घर काहुलहैनहिंभेवा
बीचहि अरझरहे जम फाँसा। चीन्हनपायोअबिचलसाथा
धाम कबीर जहाँ है भाई । तहाँ न जमराजा गम पाई ॥
जाहि दया सतगुरुकी होई । घरकबीर गम पावै सोई ॥
द्विज चकृत कन्या सुत बाता। यह तोअचरजअहैबिधाता
ए कन्या निज कहो प्रगासा। धाम कबीर प्रगट कहो बासा
काशी माहिं रहे केहिठाई । देहु चिन्हाइ भवन हम जाई॥
चल द्विज तोका भवन लखाऊँ। कहोसो जायसँदेशसुनाऊँ

साखी।

जो कुछ तुम आज्ञा करो, कहूँ सँदेशा जाय।
दास कबीर एक पुरुष है,ताका भेद न पाय॥

रमैनी।

तब सर्बानंद कीन बिचारा। जोलहा ज्ञान देख यहिबारा॥
जल पूरन बरतन भरि लेहू। लै कबीर आगे धरि देहू॥
कहै सो मोहिं सुनावहु आई। सो कन्यायहसुनिचितलाई॥
सुन मुखतें बरतन धरि देहू। जस कछु कहै सोइमोहिंकहेऊ॥
कन्या गुरु पहँ चली तुरंता। बिप्र ठाढ़ द्वारे बुधवंता॥
कहा बिप्र एक द्वारे आवा। सो मोहिं तुम्हरेपास पठावा॥
तिन जलपात्र दीनमोहिंपाहीं। बचनसँदेस कहाकछुनाहीं॥
उठे कबीर सुई यक हेरा। जलमें डारि दीन तेहिं बेरा॥
कन्या बरतन बिप्रहि दयऊ। तापाछे हमहूँ चलि अयऊ॥
जाय द्विज जल बरतनदीना। कन्या बूझ विप्रतब लीना॥

साखी।

लेहु विप्र तुम जान, दीन सँदेसा पुरुषके।
तुम हौ विद्यामान, बूझि लेहु मन परखके॥

रमैनी।

हे कन्या कस कहे विचारा। भाष सुनावो सो उपचारा॥
कन्या कहे भाख कछु नाहीं। सुई एक डारा जल माहीं॥
पण्डित मूरुख मरम न पावा। कहत न बूझै सुई प्रभावा॥

अगुन छगुन करहीं हिय माहीं। तब हम तुर्त गये द्विजपाहीं॥
कुशल प्रसन्न बूझे सुनिवानी। कहो पंडितसो मोहिंबखानी॥
पठये जल भरिअस अनुमाना। हमहैं विद्या पूर अघाना॥
जिमि जल वर्तन नाहिसमाई। तिमि हम विद्या रहे अघाई॥
तब हिये गम जाना द्विजराई। दीनो तबै सुई जलनाई॥
तोहि विद्या सम्पूरन भाई। शब्द हमार बेध तोहिं जाई॥
सुन पंडित चितसम्भव आना। इनमाअहे अगमकछुज्ञाना॥

साखी।

बिप्र सोच मनमें भई, करि हिर्दै अनुमान।
कैसो ज्ञान कबीर है, कौन करत परमान॥

रमैनी।

तेहि छिनरहोहृदय अनुमानी। प्रातहि करब गुष्टहमठानी॥
रातसमयद्विजआसनकियऊ। भावसहितभोजनजलपियऊ
सकल रैन बहु शंका ठाना। आलस निद्रा सबबिसराना॥
चितमाँबहुतगुनावनकीना। बहुविधि ज्ञान ठानतबलीना॥
सर्वाजीत नाम है मोरा। बहुत बुद्धि हमरे नहिं थोरा॥
बहुतक ज्ञान कीन हम भाषा। आदि अंतमधएकनराखा॥
जीत जोलाहा लेब बड़ाई। जगमा कोऊ नहिं ठहराई॥
माथे तिलक देब हम तबहीं। नामकबीर मिटाउब जबहीं॥
करत विचार होत परभाऊ। उठे सेजसे नित्त सुभाऊ॥
जल भरझारी चले तुरंता। तजतसरीरमल सोच अनंता॥

साखी ।

जहँ पंडित बैठे रहे, धरके सिरपर हाथ ।
मल त्यागन हमहूँ चले, बैठ गये सँग साथ ॥

कबीर सर्वानंदगुष्ट ।

रमैनी ।

रामराम द्विजको हम कहेऊ।सुनतहि बिप्रहियेअतिदहेऊ॥
भये किरोधित तब परस्योजल।इच्छाजुगुत तज्योनाहींमल
कहे विप्र देखा तुम ज्ञाना । जोलहा जात अहौ अज्ञाना॥
ऐसे समय राम तुम बोले । काह कहूँ हरि त्रास न डोले॥
अहोविप्र मोहिं कहो बुझाई । कवने समय राम लवलाई॥
कहै सर्बानंद सुनहु जोलाहा। करम नित्तभाषो तुम पाहा॥
वेद प्रमान लै माटी पानी । तब मुख सुद्ध राम जपबानी॥
अहो विप्र अस जो तुम करही ।तोमुखसुद्धविप्रसुचिरहई॥
कहै विप्र है वेद प्रमाना । तो मुँह होय पवित्र सुजाना ॥
यह सुनि गयेसुरसरी तीरा । कर पग मंजैं मुखदै नीरा ॥

साखी ।

नदी किनारे बैठके, हाथ पाँव मुँह धोय ।
कर शरीर शुद्धी तबै, चले विप्र ढिग सोय ॥

रमैनी ।

पानी कर पग मञ्जन कीना । कर पखार जलकुल्ला लीना॥
कुरला कर द्विज बचन प्रमाना । यह कुरलाद्विजऊपरताना

चौंक उठे द्विज यह काकीना। फिरजोलहातुमजातकमीना॥
हेसर्बानन्द मुखसुचिभयऊ। कुरला कीनअसुचितर गयऊ॥
मुखसुधजलपर संगतुमभाखा। तुम्हरे कहेहृदय हम राखा॥
ए सर्बानंद तुम बड़ज्ञानी। एतना मर्म तुमहूँ नहिं जानी॥
रज औबीर्जनरककीदेहीं। सदा असुचि सुचि नामसनेही॥
जो मन तजत प्रान कर गवना। करमुखसुधहरजपियेकौना
पुनि द्विज मञ्जन लाग शरीरा। तबबरतनएकलीनकबीरा॥
गोबर घोरि ताहि भरि लीना। उरतनकेमुखढकनादीना॥

साखी।

भर्म ज्ञान जब विप्रका, देखा अधिक बिचार।
तब कबीर परगट किया, ज्ञान निखण्ड अपार॥

रैमनी।

लैकर त्रिण मञ्जै पुनि ताहीं। झलकै अधिकप्रगटमलनाहीं॥
कहै सर्बानंद सुनो कबीरू। सुन्दर बरतन बहु मतिधीरू॥
केहि कारन अब मंजै भाई। मल नहिं तनको परैलखाई॥
सुनि पण्डित नीके तुम कहेऊ। ऊपरशुचि अंतरमलरहेऊ॥
मोहरा खोलि उलट देखलावा। सर्बानंददेखिघिनआवा॥
सुनि सर्बानंद अस्थिर बाता। अंतर मैलप्रगटशुचिगाता॥
जल मंजन तन मैल नसाई। मनमलकहो कौनविधिजाई॥
बिन गुरज्ञान न मन शुचिहोई। रैन दिवस तनमाँजै कोई॥
काम क्रोध तृष्णा हंकारा। लोभ मोह मनमलहिविकारा॥
परनिंदा परघातअनीती। मन रहु असुचि करमकर प्रीति॥

साखी।

इंद्री भीतर मल भरा, मलमुत बना शरीर।
देह त्याग बिन सुधि नहीं, पंडित भरम गँभीर॥

रमैनी।

सर्बानंद मगन तब भयऊ। पै उत्तर कछु नाहीं दियऊ॥
पुनि लागे जल तरपै सोई। चित निश्चल मनथिरनहिंहोई॥
हम जल उलचै लाग करारा। सर्बानंद पुनि हमै निहारा॥
कहैं सबानंद सुनि मतिधीरू। केहिकारन उलचतहौ नीरू॥
कहैं कबीर सुनिविप्र सुजाना। फुलवारी गुरुकेर झुराना॥
तेहि कारन हम उलचैं नीरू। सुनपंडित कथकहैकबीरू॥
कहैं सर्वानंद यह अनरीती। बात अगम कहहू बिप्रीती॥
कहँधौं फुलवारीहै भाई। जल सुरसरिमहिं जात समाई॥
कहैं कबीर सुनि पंडितराजू। तुम जल उलचे कवने काजू॥
कहि सर्बानंद सुनो गोसाँई। देव पित्र जल तृपित अघाई॥

साखी।

पुत्र पित्र जल देतहैं, मरे पै खाँडो खीर।
कहैं सर्बानंद तरनको, मानहु बचन कबीर॥

रमैनी।

सर्बानंद कहो यह मोहीं। कहाँ पित्र हैं बूझौं तोहीं॥
कहैं सर्बानंद सुनौ सुजाना। देव पित्र सुरपुर अस्थाना॥
कहैं कबीर जल ठांव रहाई। देव पित्र कौनेबिधि पाई॥

कैधौं जलहिरहेतुम पुरखा। पढयौ वेद पैलख्योन मुरखा॥
हमरी असमति जानी भाई। साधु नमहँप्रभु प्रगटदिखाई॥
जहँ हरि तहाँ पित्र अरु देवा। सबै तृपित साधुनकीसेवा॥
कहँ अंते प्रभु खोजौं जाही। हम देखा संतन के माही॥
हरि औ संत दुईजिन जानो। प्रभुकोसंतनमा पहिचानो॥
अस प्रतीति आनहु उरमाहीं। साधनतजि प्रभु अंतेनाहीं॥
जैसे वृक्ष वृक्षकी छाया। अस हरि संतन माहि समाया॥

साखी।

पंडित करहु बिचारि, हरि पूरन सबमें अहै।
कहैं कबीर पुकारि, ज्ञानदृष्टि निरखत रहै॥

रमैनी।

रह्यो मौन होय कछू न बोला।ज्ञाता शब्दपरखि हिय डोला॥
उन चौका दै सिला खँडावा। प्रतिमा पूजन काम न लावा॥
नित्य नेम बहु करै बिधाना। तहँवाँ हम आयसअस ठाना॥
मूरतिको पूछयौं कुशलाता।कहै न मूरति मुखकुछ बाता॥
हो पंडित कस देव तुम्हारा। एकहु बातन सुन्यो हमारा॥
साजमिठाई धरे तुमआगे। खायन मूरति परम अभागे॥
नाककान मुख श्रवननश्वासा।कहु कौने विध करौ गिरासा॥
तजैबोलता जड लवलाई। जड पखान सेवा केहि पाई॥
मूरति सिरज्यो पूजो ताही।इनते श्रेष्ठ वही पुनि आही॥
सिरज्यो पात तोरतुम आना। सोलै निर्जिव पूजा ठाना॥

साखी ।

मूरतिको क्या पूजिये, मूरतिहै बिन जीव ।
जनम सिराने पूजिके, मिले न तवहूँ पीव ॥

रमैनी ।

हो पंडित तुम आपन चीन्हा। बिन गुरु ज्ञान चक्षुके हीना॥
लगमा ब्याह करै जो कोई। आपतें अधिक होय जो सोई॥
आपतें श्रेष्ठ मिलै जब नाहीं। तो निजसम नर खोजमिलाहीं॥
तुम सिज्यौं घट ब्रह्मसमाई। कस निर्जीव कियो मनलाई ॥
मैं तोहिं कहूँ सुनो हो देवा। जीव अमर है अलख अभेवा॥
जीव अमर तन बिनसै भाई । तन धर जीव बहुत दुखपाई॥
अमर नाम जब जीवै भेंटै । जनम मरनको संशय मेटै ॥
अमर नाम सो खोजोभाई। जेहिप्रताप जम निकट नआई॥
अमरलोक सतलोकके आहीं। तीनलोक परलयतर जाहीं ॥

साखी ।

जीव अमर है पंडिता, जग माया फरफंद ।
कहैं कबीर सुख दुख मिलै, यह शरीर सम्बंध ॥

रमैनी ।

विरतम कला नाम धर जेते । जनम मरन परलय बहु तेते॥
जासों चोलना अम्मर भाई । तासों नाम अमर सुख दाई॥
अमर देह सत पूरुष आहीं । वे नहिं आय गरभके माहीं॥
जो सतगुरु पद रहै समाई । ते हंसा सत लोकै जाई ॥
अमर नाम सतगुरुसो पाई । सतगुरु अस्थिरध्यान कराई ॥

भूत भविष्य जपै नर कोई । बर्तमान बिन मुक्ति न होई॥
बर्तमानमा सब्ब है सारा । सतगुरु भवतारन कँड़िहारा ॥
जाग्रत स्वप्न सुषोपति तुरिया।जाग्रत अहै सजीवन मुरिया
जाग्रत गहै तुरिया सो पावै। स्वप्न सुषोपति जग भरमावै॥
पुरुष बिदेह तुरिया अस्थाना । जाग्रत ब्रह्म देहमा जाना॥

साखी ।

जाग्रतम सोवन करै, सो वनमें लवलाय ।
सुरति डोर लागी रहै, तार टूटि नहिं जाय ॥

रमैनी ।

पुनि जलपान करन तिन चाही।जल माटीके बरतन आहीं
करवा छुइ हम लीन्हा भाई । सर्बानंद चितै सकुचाई ॥
कर करवा लै रहि मुख चाहीं।भरम बडो जल अँचवै नाहीं॥
कहे छुये मम बर्तन स्वामी।हम ब्राह्मनजलकीन अकामी ॥
कहैं कबीर यह अचरज बाता।उलटी रीति अपंथ जगजाता
विप्रित कथा कहूँ केहि भाई । राजा पंडित सब अन्याई॥
सब जग पड़ाभरम दिनराती।करम धरमअरुजातअजाती ॥
धन पंडित हौ धन तुम वेदा। लखा न काहू सतमत भेदा॥
हे पंडित यह कहो बुझाई । उत्तम मध्यम कोहै भाई ॥
सुनबानी चित भये अँजोरा ।सीसनाय तिनकार जगजोरा॥

साखी ।

अस्थि मांस त्वचा रुधिर, तत तिरगुण एकसार ।
छूत कहांसे ऊपजी; पंडित करो विचार॥

रमैनी ।

विप्र ब्रह्म तब कीन विचारा। सर्वव्याप कीनो विस्तारा ॥
फिरपंडित मन अस बौरानी। सार असार न एकौजानी॥
तब उन अशुभकरम एककीना।धरमदास तुम सुनोप्रवीना।
अजिया सुत एक गुप्त मँगाइस।गुप्तहि ताकर गराकटाइस॥
गुप्त रसोंई मांस बनाई । बहुविधि अंतर कपट दिवाई ॥
पुनि चौकामें बैठे जाई । हाड़ एक कर लीना भाई ॥
तेहि पीछे हम पहुँचे जाई । मोही देखत तुरत लजाई ॥
कहैं कबीर सुनो द्विजराई । हमसों अंतर कपट कराई ॥
गुप्त अकर्म करैनर कोई । प्रभुसे नहीं छिपै पुनि सोई ॥
पापपुण्य नहिंछिपैछिपाये।लाख जतनकोइ राखछिपाये॥

साखी ।

हिरदे करहु बिचार, हे नर बावर मंदमत ।
गहै अभक्ष विकार, दुष्टजीवकी अधमगत ॥

रमैनी ।

तुमअस सुरतिधारचितज्ञानी।कसनहिंचलोबाटपहिंचानी॥
धन्यधन्य तुम पंडित राजू।तुम ब्राह्मन यह काकर काजू ॥
कर अस्नान तिलकअति नीको।काँधेजनेउचालबिनफीको॥
उत्तम जात चाल बिन नीचा। छुवै चमार घालजलसींचा॥
कीन अस करम कीनकहु मोही।द्विजकी चालनदेखोंतोही॥
हेपंडित तोहिं दया न आई । काहे परगर काटौ भाई ॥

करम कसाई विप्र कहावो । मानुष देहीं बाद गँवावो ॥
सर्वदया भाखो भगवाना । कस नहिं बूझे कहो सयाना ॥
गीता भगवत देखि बिचारी । जीवदया भाषो बनवारी ॥
जीव दया जेहि हृदय न आई। कहैं कबीर सो पूर कसाई ॥

साखी ।

का नर कीट पतंग, जग साहब भरिपूर है ।
दया हीन मति भंग, सूकर कूकर कूर है ॥

रमैनी ।

जिभ्या स्वादकाजजिवखोवा।जान बूझिके जनमबिगोवा॥
भूले मूढ जगतके ज्ञानी । तुम्हरी दृष्टि देख बौरानी ॥
सर्वानन्द रहे सकुचाई । कर विचार पद सीस नवाई ॥
मैं भूल्यों विद्या अभिमाना ।अबहिय बेध शब्द सहिदाना॥
अब मोहिंशरनदेहु तुम स्वामी।कृपा करो तुम अंतरजामी॥
पुस्तक बहुत आनधर आगे।दीन बचन बहु अतिअनुरागे॥
तब रामानंदपै लै गयऊ । गुरुकी दिक्षा ताहि दिवैऊ ॥
भगतभेष तिन दीनो भाई । गुरु हढ़ करै सदा सेवकाई॥
गुरुसे विदा माँगि दिनएका।जननी पहाँ चले मथटेका॥
जाय भवन निज पहुँचे जबहीं । जननीके पग लागेतबहीं॥

साखी ।

धन माता सुखदाइया, दीनो अस उपदेश ।
साहेब कबीर गुरु मोहिं मिले, मेटो काल कलेश ॥

कथासमाप्त ।

सतगुरुवचन।

रमैनी।

धरमदास तोहिं कहि समझावा।सर्बानन्दसे जो बनिआवा
निरखो सुरति नाम लवलावो।तनछूटेसतलोक समावो॥
जीवन शब्द चेतावहु भाई।चेतै जीव पुरुष लवलाई॥
जो जीवन सतशब्द हढावै।सो वो सत्तपुरुष मनभावै॥
माया बिन जिवरोकन राख्यो।हंसा बोध नाम असथाप्यो॥
धन सम्पति सेवक ग्रह आही।अरपैसबै संत जो चाही॥
जो मायाको जोगवा भाई।नहिं साहेबके स्वारथलाई॥
वह जिव बावर नरकै जाई।सक्ति माहिं जोराखिछिपाई॥
सो जिव अंत बहुत दुख पावै।भक्ति हीनजम नाचनचावै॥
जगमें सेवा बस भगवाना।धरमदास यह बचन प्रमाना॥

साखी।

सुरत रहै वह देशको,धरै साहेबका ध्यान।
कहैं कबीर वह अमर है, पावै पद निर्वान॥

धमदासबचन।

रमैनी।

हे साहेबतुम दीनदयाला।दयासिंधु दुख हरन कृपाला॥
हे साहेब पद गहु अनुरागा।हेप्रभु तुम मोहिं कीनसुभागा॥
मैं बावर गुरुहीन कुचाली।तुमदीना मोहिं पंथ निराली॥
सरना एक अमित प्रभुताई।अमित रिसाल वरनिनहिंजाई॥

जे सेवक परही तुम दाया । ताके हृदयकुमतिकसआया ॥
पूरन भाग करै सेवकाई ।धन सेवक जिन गुरुहि रिझाई॥
मैंजग बँध्यो अजोग विचारी।अधमजानतुमलीनउबारी ॥
अब यह दया करो सुखदाई । दुई सेवकके दरसन पाई ॥
हे प्रभु उन मोहिंबड़ सुखदीना। भरमत भरमराखउनलीना।
विरह सिंधु बूड़त मोहिं राखा।उन दरसनकीहैअभिलाखा।

साखी ।

प्रथमै दुतिया प्रघटें, धरे साधका भेष ।
तिन दरसनकी चाह है, बसैं सो कवने देश ॥

कबीर धर्मदासवचन ।

रमैनी ।

धरमदास तुम दरसन पैहो।लीला देखि छकितहोयजैहो ॥
आपसे प्रगट रूप दिखलाया ।एक दीन होयएक समाय॥
लीला लखि चकृत भयदासा। पुनिविनतीएककीनप्रगासा।
धनसाहेब तुम अविगत नाथा।मोहीनिसदिनराखोसाथ॥
हे प्रभु अविगतकला तुम्हारी । हमहै कीटजीवविषचारी॥
सत्तलोक तुम बरनि सुनावा । शोभा पुरुष हंसबतावा ॥
कैसा देस राज वह आही । चित इच्छा प्रभु देखनताही॥
धरमदास यह निर्धिन काया।यह तन पुरुषदरसनहिंपाया
जब ठका तन पूरा होई । सत्तलोक तब देखो जोई ॥
धरमदास तब चरन निहोरा । हे प्रभु तिरखा मेटो मेरा॥

साखी ।

तुम समदृष्टी सर्व मय, हम हैं सिक्ख अजान ।
सत्तलोक दिखलाइये, मन बिच अधिक समान॥

रमैनी ।

धरमदास यह हटका करहू । मानो शब्द शीशपर धरहू॥
हम पूरुषसो ऐसे अहई । जलतरंग जस अंतर रहई ॥
जिमरविअरुरवितेजप्रकाशा। तिममोहिंपुरुषबीचधर्मदासा
जो जीव शब्द हमारा जानै । सोहंसा सतलोक पयानै ॥
हमरीसुरति गहो चितलाई । तब पूरुष पद दरसन पाई॥
जो सेवक गुरु करै प्रशंसा । कहैं कबीर सो निर्मलहंसा॥
अस परतीत सिक्ख उरआनै।गुरु औ पुरुष भिन्न नहिंजानै॥
जबलग चित अस रीत नआवै।तबलगजीवनलोकसिधावै॥
हे साहेब मैं विनवहुँ तोहीं । पुरुषद रसबिनकलनहिंमोहीं॥
तुम बरन्यो सतलोककी शोभा।तातेंसुन मोरा मनलोभा॥

साखी ।

हे प्रभु चिंता मेटहू, कल न पड़ै दिन रैन ।
बिन देखे वह देसके, नहिं होवै सुख चैन॥

सतलोकबरनन ।

रमैनी ।

धरमदासजोअसचितकीन्हा । तनतजचलोचलेपरवीना ॥
राख्यो तन लै गवन्योहंसा । जहँ पहुँचे तहँ काल न संसा॥

पलनिमेषमें पहुँचे जाई । अविगत लीला लखै को भाई ॥
शोभा लोकदेखि मनमाना। उदितअसंखनससिऔभाना॥
जितदेखैं जगमग झलकाहीं । देखत छकित भये मनमाहीं ॥
द्वारिपाल जो हंसा रसिया । तामें एकहंस अस कहिया॥
यह हंसा तुम जाहु लेवाई । पुरुष दरसकर आनहु भाई॥
चले लेवाइ पुरुष पहँ जबहीं । जगमगहँसदेखिसबतबहीं॥
करहि कलोलवा मंगलचारा।सोभाअदभुत अगमअपारा॥
हंसन सोभा काह बताऊँ । सत्तभाव लो बरने सुनाऊँ ॥

साखी।

सोभा हंसन देखिकै, सुख नहिं हृदय समाइ।
नैनन निरखत रूपको, देखि देखि मुसकाइ ॥

रमैनी ।

जगमग रूप हंसके करही । अमल क्षीर बहुशोभा धरही॥
हंसभाल सोभा किमकहेऊ ।खोड़िषभानुचंद्र छबि लहेऊ॥
सुकृत परतरोम परकासा । हीरामन जो उदित रोमासा ॥
कंचन कलस जडतमन लोना।रतन थारआरत महँ सोना॥
हंस मगन मुख शब्द उचारा। करत कलोलेतनमन वारा ॥
सुरतिहंसके आगे लीन्हा।निरति करत चलि हंस प्रबीना॥
सिंगासन छबिदेखत मोहा।अदभुतअमितकलातिनसोहा॥
एक रोमके कला अनंता । बरतन कोइ न पावत अंता ॥
एकरोम रविससिकोटीसा ।नखकोटिनविधमिलनरवीसा॥
पुरुष प्रकाश लोकआँजोरा ।तहँनहिं पहुँच निरंजनचोरा॥

साखी ।

जोत अगाध अनूप है, कोटि भानु ससि भेर ।
कोटि चंद्रमा थकित भे, ऐसे परम उँजेर ॥

रमैनी ।

पुरुष कबीर देख एक भाई । धरमदास पुनि रहेसकुचाई ॥
पुरुष दरस कर आये तहँवा ।प्रथम कबीर बैठ रहे जहँवा ॥
यह कबीर बैठे पुनि देखा । पुरुषकला तिन एक बिसेखा ॥
कस अजुगुत तुम कीनो भाई ।वहाँमोहि परतीति न आई ॥
पुरुष कबीर वहाँ एक छिपाये । सत्त पुरुष जगदासकहाये ॥
धाय चरण गहि चितअकुलाये।हे प्रभुअब परिचयहमपाये
यह सोभा कस उहाँ दुरावा ।काहे न जगमें प्रगट दिखावा ॥
धर्म न जो यह छबि जग जाई।कम्पित होय निरंजन राई ॥
सबयजीव तब मोहिं लवलावै।उजड़ै भव सतलोकहिआवै ॥
ताते गुप्त देखि जग माहीं । शब्द सनेही जिव समझाहीं ॥

साखी ।

धरमदास लेउजान, हम वै एक अस्थानही ।
रहो शबद परमान, हम उन कछु अंतर नहीं ॥

रमैनी ।

शबद परख चीन्हैगा कोई । कर परतीत घर पहुँचै सोई ॥
कहै कबीर सुनि सुकृतअंसा । दरस्यो लोक मिटै सबसंसा ॥
अब तुम चलो बेगि संसारा । जीव चेतावहु कर उपकारा ॥

हे साहेब अब वहाँ न जाई। यह सुख घर तजिकहाँसिधाई॥
वह जगदेस अपरबल काला।नहिं जानों मत होय बिहाला॥
धरमदास तोहिंअंतर नाहीं। हम तुमरे सँग सदा रहाहीं॥
तुम देखो सतलोक प्रभाऊ। हंसन कहा सँदेश सुनाऊ॥
मान्यो शबद सीस पर राखा। लैके चले सुकृतै भाषा॥
पलछिनमहँ जग्गहिचलिआये।बैठि देखि धर्म न अकुलाये॥
परचौ चरन गहिसाहेबकेरा। करबिनती पद कहिमुखबेरा॥

साखी।

अबिगति अगम अथाहजल,निर्गुणसर्गुण आदि।
को तुम पावै थाह जग, गुप्त प्रगट आनादि॥

रमैनी।

कीटतें भ्रंग मोहिं प्रभुकीना। निश्चय रंग आपनोदीना॥
पारस परमलोहजिमिहीमा।तिमिमोहिंकियनाथव्रतसीमा॥
हेप्रभु तुमसे भयो अनंदा। जिमि चकोरहरषै लखिचंदा॥
जनम मरण बहु संकटनासी। तुम चरनाबिंद सुखरासी॥
हे प्रभु आसिष दीजे मोहीं। एक लव नहीं बिसारौं तोहीं॥
जस मंसा तस आगे आवै। कहैं कबीर दूजा नहिंभावै॥
धर्मन गुरुहि दोष दे प्रानी। अपनी कर नर आपनहानी॥
जो गुरु वचन गहै चितलाई।व्यापै नहीं ताहि द्विजताई॥
जो गुरु वचन सीस संयोगा। उपजै ज्ञान नासभ्रमरोगा॥
पूँजी साहु सौदागर लावै। पूँजी जोगवै लाभ उठावै॥

साखी ।

सतगुरु साहु संत सौदागर, पूँजी शब्द दुकान ।
शिष साँचा गाहक भया, लाभ होय नहिं हान ॥

रमैनी ।

जो गुरु शबद गहै विसवासा । गुरु पूरा पुरवै सब आसा ॥
बिन बिसवास पाय दुखचेला। गुरुके शब्द करै नहिं मेला ॥
निडर होय तो निज घर जाई । सूरा होय नाम लवलाई ॥
तजनरभुम्मटरै जो भाई । सो जिव निश्चय जम घर खाई ॥
कसै कसौटी रहै जो हंसा । कहैं कबीर वो निर्मलबंसा ॥
संत असंत दोउ होय बड़ाई । कादर बचले सूर लडाई ॥
धरमदास तोहि बहुत बुझावा । रहनगहनसतपंथलखावा ॥
माया ठगिणा अहै रे भाई । ये काहूके संग न जाई ॥
अभ्यागत जो आवै द्वारा। संत असंत कुछ नाहिंविचारा ॥
भिक्षा देहु हरखके ताहीं। यहसम जोगजुगुत कुछ नाहीं ॥

साखी ।

हे प्रभु रंक होय या राव, दासा अभ्यागत तनय ।
निसिदिन रहै उदास, केहि प्रकार सेवा बनै ॥

रमैनी ।

सुन धर्मन बिनती जो भाषी। सुकृतअंछितकछू न राखी ॥
तन बस्तर लै भेंटै भाई । जो असक्त तौ काह कराई ॥
आपन खाय तो और खवावै। नहिं तो एक संग रहि जावै ॥

तीर्थ बर्त जप तप बहु कर्मा ।कहैं कबीर सब मनको धर्मा॥
मानै गुरू साथकी बानी । कहैं कबीर शब्द सहि दानी ॥
सत्य शब्द गहि मिटे उपाधू। कहैं कबीर संग सतगुरु साधू॥
सत्य नाम गहु तज द्विजताई।कहैं कबीर मैं ताहि सहाई ॥
सत्तनाम गहि चीन्है जोई । कहैं कबीर जो गुरुगम होई ॥
को हमको तुम कोहौ अंता । कहैं कबीर गुरु पारस संता॥
सो हमसो तुम सोहै अंता । कहैं कबीर गुरु पारस संता॥

साखी ।

एक समाना सकलमें, सकल समाना ताहिं ।
कबीर समाना बूझमें, तहां दूसरा नाहिं ॥

रमैनी ।

सतचित सतगुरुको ध्याना । कहैं कबीर सतगुरु परवाना॥
सतगुरु शब्द ज्ञान गुरुपूजा । कहैं कबीर लख मोहीं कूँजा॥
कुंज माहिं मोहीं ठहरावै । कहैं कबीर सो संत कहावै ॥
संत कहाय जो साधे आपा। कहैं कबीर तेहि पुण्यनपापा॥
पुण्य पाप नहिं मानगुमाना।कहैं कबीर सो लोक समाना॥
जिंदा मुरदा चीन्हों जीऊ । कहैं कबीर सतगुरुनिजपीऊ ॥
मुर्दा जग जिन्दा सत्तनामा।कहैं कबीर सतगुरु सुखधामा॥
कौन सो जीतै कौन सो हारै ।कहै कबीर कसकाज सँवारै॥
एक सों जीतै एकसों हारै । कहैं कबीर गुरुकाज सँवारै ॥
इन्द्रीजीतै साधसे हारै । कहैं कबीर सतगुरु निसतारै ॥

साखी ।

इंद्री जीतै साधहै, इंद्रीभोग असाध ।
कहैं कबीर बस मन करै, सोहै पूरा साध ॥

रमैनी ।

सतगुरु सोइ सतनाम लखावै । सत्तलोक हंसन पहुँचावै॥
सतनाम सतगुरु सतभाखा। शब्द गिरंथ कहिगुप्तहि राखा॥
विन जिभ्याकर अमृत पाना।सत्तनाम सतगुरु गमजाना ॥
सतसूरति अमृत सुख धीरा । अमीअकाश जहाँ है बीरा ॥
सोहं ओहं खं मन बीरू । धरमदाससों कहै कबीरू॥
धारै जोग कही निज काही।नाद सुसील लखै बहुताही ॥
प्रथमै नाद बिन्दुसो कीन्हा।मुक्तपंथ नाद्दै गहि चीन्हा ॥
नादसोशब्द पुरुष मुखबानी।गुरुगम शब्दसोनादबखानी॥
पुरुषनाद सतषोडस अहई । नाद पुत्र शिखशब्दसोअहई॥
शब्द प्रतीत गहै जो हंसा । शब्द चारचा सो मम हंसा॥

साखी ।

नाद शब्द घट घट बजै, उठै मधुरधुन राग ।
कहैं कबीर लखप्रेम जन, तब होवै बैराग ॥

रमैनी ।

शब्दकीचाल नाम दृढ़ गहई।जम सिर पगदैसो निर्भयई॥
सुमिरन भजन टहल चित धरई।सतनाम गहि हंसातरई ॥

बिन्दु होय शब्दमम धावै। शब्दडोर धरि मोहिं पहँआवै॥
नाद शब्द बिन हंस बिगोई। संग सहित सो निज घरहोई॥
कितने पढ़ गुन नरके जैहैं। कितने पढ़गुन लोकसिधैहैं॥
हेसतगुरु हम तुमरे दासा। बिनती करूं खसम तुम पासा॥
पढे गुने नरके किम जाहीं। सो चरित्र बरनो मोहिं पाहीं॥
सुन धर्मन पढ गुन अरथावै। शब्द कहै सो चाल नआवै॥
पढगुन तत्त्व बिचारै नाहीं। ऐसे पढ गुण नरकै जाहीं॥
जिन पढ शब्दचालगहिभाई। कहैंकबीर सो लोक सिधाई॥

साखी।

कहता बकता जिउ तरै, सबै जगत तरि जाय।
कागा हंसा ना भया, जुग जुग आवै जाय॥

रमैनी।

धरमदास सुन शब्द हमारा। रहियोनिशिदिन नामअधारा॥
दुष्ट मित्रसे प्रेम बढैये। भक्ति भजन आनँद होय रहिये॥
जो सुख होयतो जिनउतरावै। दुखके परे नहीं बिलगावै॥
संकटमें बड साहन कीजे। निश्चय नाम ध्यान चितदीजे॥
चित निश्चित रहै जो भाई। तो संकट सब जाय नसाई॥
यह जम देस अहै रे भाई। दुख सुख तनधर व्यापै आई॥

यह जिउ चोर कालके अंसा। धरमराय घर करै बिधंसा॥
चाहे साधन चित्त डोलावै। डिढ परतीत नाम गुनगावै॥
काँचे जीवनके यह लेखा। संकट परे बिकल होय पेखा॥
सुख सम्पति जो लोक बड़ाई। यह सपने धनजानो भाई॥

साखी।

सपने केरी सम्पदा, जगमें फैली आय।
कहैं कबीर कोइ जागिया, सभ्रा श्रिष्ट नसाय॥

रमैनी।

धरमन सुरति हंस जो होई। गहै न दुख सुख वाकोकोई॥
सार अक्षर निर्वारै भाई। गुरु गम पंथ जो खोजे पाई॥
पाँचौं के परपंच मिटावो। पाँच भूतके स्वाद न भावो॥
पाँचो केरस्वाद बिष जानो। गुरुगम शब्द परखिहियमानों॥
पाँचोंहैं परबल घट माहीं। मन राजा पाँचोंमें आहीं॥
इंद्री स्वाद करम नरहीना। नारीभोग रतन तज दीना॥
संतन श्रवन स्वाद रसबानी। शब्द भजन हिय सारसमानी॥
संतन त्यागैं बास कुबासा। नाम बिदेह जपै बिसबासा॥
संत सुरति अनुरागी रहई। निशिदिन प्रेम भक्तिचितबसई॥
सतगुरु ध्यान मनहिमाँ धरहू। सार शब्द लै भवजलतरहू॥

साखी।

सार शब्द सतगुरु दिया, लखा सो सिर्जनहार।
साहेब घट घट बोलता, कहैं कबीर पुकार॥

छन्द ।

घर नेह बाँधो पाँच साधो सार सतगुरु ज्ञानसे ॥
यह देस है जमराजको तरिहो विदेही ध्यानसे ॥
सतनाम सुमिरो शब्द धारो करहु मंजन तासुहो ॥
सतध्यान सतपदरूप अस्थिति घर अमर निवासुहो ॥

सोरठा ।

हरख सोग बिसराय, गुरुमुख शब्द प्रतीति कर ।
अमरलोकको जाय, दयाछिमा सत सील गहु ॥

साखी ।

सहस एक सत नव बढ़ी, बासठको है साल ।
चैतबदी नौमी कही, गुरु बुधि देव दयाल ॥

इति ठाकुरदासविरचित कबीरउपदेश
समाप्त ।

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, बम्बई - ४००००४

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११०१३

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि.ठाणे- महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज-श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्यावाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

